अटारवां

(राजस्थानी संस्मरणात्मक रेखाचित्र)

डॉ० ब्रजनारायण पुरोहित

राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी)
बीकानेर (राजस्थान)

प्रकाशक
मानद मंत्री,
राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी)
बीकानेर (राजस्थान)

पैलो संस्करण--११०० प्रतियां
सन् १९७३

मोल—रु ५.७५

मुद्रक—
गणराज्य प्रेस
बीकानेर

समर्पण

जिणां रो आशीर्वाद ही इण पोथी में
फलित हुयो है, उणां भाईजी
श्री युगलनारायणजी (एडवोकेट साहब)
नै
'अठारवां' नांव री आ पोथी
सादर समर्पित है

—ब्रजनारायण

प्रकाशकीय

राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी), बीकानेर, आपरै पैलै साल रै प्रकासणां सारू आठ पोथ्यां स्वीकारी, जिणां मांय सूं डॉ. ब्रजनारायण पुरोहित री कृति 'अटारवां' अेक है।

डॉ. पुरोहित राजस्थानी रा उदीयमान साहित्यकार है अर इणां री कृति रै प्रकाशण सूं तथा दूजै नवोदित साहित्यकारां री पोथ्यां छापण सूं आ बात स्पष्ट हुवै कै राजस्थानी संगम (अकादमी) खाली पैली सूं थरपीज्योड़ा लिखारां री रचनावां ई छापै कोनी, श्रेष्ठ रचना-लिखार नया साहित्यकार भी इण मंच सूं प्रकाशण पावै।

भरोसो है, अटारवां में संकलित, डॉ. पुरोहित री अै रचनावा सहृदय पाठका रै मन भासी।

—श्रीलाल न० जोशी

मानद मंत्री

राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी), बीकानेर

दृष्टि : आभार

विधाता री इण सृष्टि में मिनख जूण ई इसी है जिण नै मुक्त हाथ, मुक्त वाणी अर विकसित मस्तिष्क प्राप्त है। मिनखपणै में ई इण वास्तै मानव नै आप रै व्यक्तित्व रै विकास रो अवसर मिलै। इण असार संसार में असंख्य भांत रा लोग रैवै; आछै सूं आछा अर हळकै सूं हळका। जीवण में मोकळा लोगां सूं भेटा हुवै पण केई इसा मिलै जिकां में कई खूबी हुवै, जिकी चिर स्मरणीय हुवै। एक दातारी रो रूप तो बीजो कंजूसी रो पूतळो, एक विद्वान तो दूजो ठोठ, एक हुसियार तो दूसरो भोदो, एक डोढ सैणो तो बीजो डफोळ, एक ठगणियो तो दूजो ठगावणियो, इण तरै अणगिणत रूप देखीजै। केई आप रै गुणां सू ओळखीजै तो केई कुटेटपणो रै कारण। पण जन-मानस पर दोना तरै रा रूप अमिट रैवै।

नामी अर बिशेष व्यक्ति रै खातर 'अटारवो' शब्द प्रयुक्त हुवै। इण पोथी में जिंका चैरा सामै आवै, वै भी केई न केई कारण सूं विशेष रह्या है। इण वास्तै पोथी रो नाव 'अटारवा' राखियो है।

म्हो मन-सागर असंख्य विचार वीचिकावां सूं तरंगित रैवै। इण तरंगां साथै कदै-कदैई मुक्तावां सूं युक्त सीपट्या भी अन्तरतळ सूं नीसर'र किनारै आय लागै। पूठी अनन्त में विलीन हुवण सूं पैलां जे झबकै मे उणां नै तत्काल ग्रहण करली जावै तो रैवै ठीक अर नई तो फेर ·········। जद उण सीपट्यां सूं मुक्तावां नै नीसार'र चोखै डोरै में, सफाई सूं पिरोय'र लडी, झूमखां या माळ रो रूप दियो जावै जद ही उणां री चमक अर दमक में निखार लखीजै। पण उण मुक्तावां रो सही मूल्यांकन, पारखी भंवरी रै हाथां रै स्पर्श बिना कियां सम्भव हुवै ?

इण पोथी रै प्रकाशण में गुरुजनां री आसीस ही म्हारो सम्बल रह्यो है। इण में जो की है, वो म्हारै पूज्य पिताश्री, सर्व श्री पं० विद्याधरजी शास्त्री, नरोत्तमदासजी स्वामी, आसारामजी पुरोहित 'महाराज', रमणमाजी,

पं० लक्ष्मीनारायणजी, हरनारायणजी, युगलनारायणजी, श्री कन्हैयालालजी गोस्वामी, कन्हैयालालजी शर्मा, मुरलीधरजी 'राजस्थानी', अगरचदजी नाहटा, डॉ० माधोदासजी व्यास जिसा समादृत गुरुजना रो प्रसाद ई है।

श्री मुरलीधर जी 'राजस्थानी', अर श्री श्रीलालजी जोशी रो हूं हृदय सूं आभारी हूं, जिकां पोथी नैं तत्परता सूं प्रकाशित करवायी। मास्टरजी (श्री दीनानाथजी खत्री) रै खातर धन्यवाद शब्द तो मात्र औपचारिक है, वां रै सहयोग खातर, हू घणो आभारी हूं।

इण पोथी री कई रचनावा हरावळ, लोक सम्पर्क, राजस्थान भारती मे प्रकाशित हुयोड़ी है। इण खातर हू सर्वश्री सत्यप्रकाशजी जोशी, जगदीशजी माथुर 'कमल', प्रकाशजी परिमल, रमेशजी जैन अर भवरजी भादाणी रो हृदय सूं आभारी हूं। श्री मूलचन्दजी 'प्राणेश' अर श्री शिवराजजी छगाणी नैं धन्यवाद देणो चाऊं, जिका व्यस्त हुवता थका भी पोथी री छपाई देखण रो कष्ट करियो।

भारती-भवन, बीकानेर —व्रजनारायण पुरोहित

आखातीज वि० सं० २०३०

सूचनिका



गुसाईंजी

गोस्वामी त्रिपुरमोहन जी नै लोग गुसाईंजी रै नांव सूं ग्रोळखता हा । उणा रो सागी नांव बोत कम लोगा नै ठा हो। कसूंबल पेचो, डुपट्टो गळै मे लपेटियोड़ो, कोट नीचो-नीचो, ग्रर धोती ई नीची-नीची—ग्रा ही वां री पोसाक । जूती देसी, कसीदो काढ़ियोडी पैरिया करता वै। बोलण मे मीठा जाणै मिसरी घुळियोडी ही वा री जबान मे । वै कैया करता कै बोळणग्राळै नै सुणीजणो चाईजै कै हूं काईं बोलूं । ईं सरस्वती रै रैवण री जाग्यां (जबान) ऊपर दध ग्रर बुरा सबदां नै नईं ग्रावण देवणा। कडवो बोलण सूं ई सरस्वती माता नराज हुवै ।

गुसाईंजी ग्राशु-कवि हा । देवी रा भगत हा ग्रर राज मे मनीजता। खान-पान बिल्कुल सुद्ध । घर री बणियोड़ी रसोई रै ग्रलावा मूंडो कठैई नईं ग्राठणों । पाणी ई डोलजळ पीवणो। वै ठंडाई पीवता तो ई घरै। एक छटाक बिदाम, ग्राधी छटाक पिस्ता, पाच मासा विजिया, काळी मिरचा रा च्यार दाणा ग्रर दो छोटी इलायची नै घोट र लुगदी बणावतो, वा रो वेटो, भोर मे। फेर छाण'र लेवता, नित रै सेवा-पूजा रै काम सूं निमट'र। वै कैवता—"भोरिया सो किरोडिया। भोरिया छाणै किरोड़िया पावै।"

वै कल्पना री उडान भरता-भरता केई लोका मे विचरता । कदै-कदै हंसाय-हंसाय'र पेट दुखावता। एक दफै वै डागळै बैठा विचार-मगन हा। पिंडताणी ग्राय'र भकभोरिया—"कंईं करो हो ?"

"थारै रवडी रो समान जुटाऊं हूं।"

"खंई बात करो ?"

"ठीक कैवूं । हूं सोचूं कै हूणै बादळ बरससी, पाणी री जाग्यां दूध । फेर गडा री जाग्यां बिदाम पिस्ता, नेजा, काजू अर इलायच्यां बरसण लागसी अर फेर चालसी आंधी ।"

"जद किरकत पडसी ।"

"गुड-गोबर कर दियो सगळो । अरे, आंधी में रेत रो एक कण ई नईं बरसै, बरससी खाड-ई-खाड अर फेर बणसी रबडी चकान-चक ।"

पिंडताणी हूसण लागी । इतै मे ई वा रो बेटो रोवतो आयो अर कैयो—"कावका मोकूं फेल कर दियो दूजी किलास मे ।"

"खंईं हुयग्यो । चाल म्हारै सागै ।"

वै कपडा पैर'र स्कूल गया अर मास्टरजी नै देख'र कैयो—

"आळा-टाळा मत करो तुम आला उस्ताद
बाळक पर किरपा करो, जी बाला परसाद ।"

मास्टरजी रो नाव बाला परसादजी हो । वा राजी हुय'र कैयो कै हूं तो काईं-कर सकूं नईं । आवो, हैडमास्टरजी कनै चाला । वै, वा कनै गया । मास्टरजी कैयो—

"अै पिण्डतजी पधारिया है । छोरो थोडा सी नबरां सूं फेल है । आप ······

इत्तै मे ई गुसाई जी बोलिया ।—

"पास करदो मुकरजी, हूं मनाऊ सुकर जी ।"

हैड मास्टरजी मुकरजी हा । राजी हुयग्या'अर वां नै पास रो कैय दियो । गुसाईंजी धिनवाद दियो अर छोरै नै कैयो—"अै कवितावा कद ताईं पास करासी, पढ़ै क्यूं नईं ?"—आ कैय'र घरै गया ।

गुसाई जी नै एक दफै राजाजी पूछियो—"मा'राज, आपनै गाव बगस राखियो है, फेर ई रुपिया भेळा नईं हुया आप रै । काईं कारण है ?"

"राजन्, काल बतासूं ।"

दूसरै दिन वां राजाजी रै सामनै आपरै दुपट्टै मे बंधियोड़ी-खुरपनियो अर कढ़ाळियो निकाळियो अर कैयो —'अो माय जावै सगळा

रुपिया तो। आप ऊपर बाग लगावणो पड़ै, राजन!"

राजाजी देखता रैयग्या।

एक वार बातो-बात चाली। राजाजी कैयो, —"मा'राज! आपरा पूरबज तो इसा हा कै समुन्दर रो सगळो पाणी पीग्या, पण आज कोई माटो भरियोड़ो पाणी पीवणआळो ई नईं मिळै।"

"मिळै क्यों नईं, हूं पी जाऊं।"

"आप पी सको?"

"हां-हां।"

"तो काल आप नैं पीवणो पड़सी। आपरै वास्तै सुद्ध डोलजळ माटै में छाणाय'र त्यार राखसां।"

"तो वा भला"—आ कैय'र वै घरै गया।

दूसरै दिन गढ में भीड लागी। घणां जणा तमासो देखण नैं भेळा हुया। हाकम-मुसद्दी, सेठ-सऊकार, ताजीमी सिरदार अर उमराव आआय'र आपरी जाग्या बैठग्या। गुसाईंजी पूगिया। वां सुद्ध माटै रै पाणी नैं देखियो अर करवो भरियो। भर'र पीवण नैं त्यार हुया। पण वां, आपरै दुपट्टै माय सूं गड्डा-गुळगुचिया खोल'र राजाजी नैं देवता थका अरज करी— "खम्मा पृथ्वीनाथ, इया नैं आप रै हाथ सूं करवै मे घाल'र तिराय देवो।"

"बूंटी घणी पियोड़ी है कांई? कदेई गड्डा-गुळगुचिया ई पाणी में तिरै?"—हंस'र, राजाजी कैयो। सै हंसण लागा।

"बूंटी नईं अन्नदाता! आप रा माईत तो इसा हा कै पत्थर री सिलावां नैं समुन्दर रै पाणी ऊपर तिरायदी। इयै वास्तै अै गुळगुचिया तो आप ई तिराय देसो, इसी म्हनैं आसा है।"

आ बात सुण'र राजाजी मूना हुयग्या। सै जणा चुपचाप। आखर राजजी वा कनैं माफी मागी अर सगळां नैं हुकम दियो कै आ बात बारै नईं जावणी चाईजै।

□ □

गुसाईंजी रै कानैं रो बेटो गाय बेचणी चावतो हो। वै रो बाडो वां रै घर रै चिपतो हो। गाय उठै ई बन्धती। वो एक दिन एक ग्राहक नैं लायो। स्वाई रो एक रुपियो लेय'र बात पक्की करी। पण भावी

जोग इमो, कै गुसाई जी ऊपर सूं झाखो घालियो। वो ग्राहक, वां रो जाणकार हो। इयै वास्तै ऊपर सूं ई कैयो—"थूं लेजावैगो खंई ? ...... लेजा-लेजा अठै सूं जल्दी। याकूं तो काल ई मिरगी ग्रायगी ही।"

ग्रा सुण'र वो ग्राहक स्याई रो एक रुपियो छोड'र बार निसरग्यो ग्रर वा रै काकै रो बेटो रीसां बळतो ग्राप रै घरै गयो।

गुसाईं जी नै ग्राप री मौत रो पेला ई पत्तो पड़ग्यो। इयै वास्तै ई वै ग्राखरी दिनां मे घर रै मिंदर सूं बार बोत-कम निसरता।

सावण रो मईनो हो। वै साल राजाजी ग्रनुष्ठान बैठावण नै त्यार हुया ग्रर वां नै ग्रधिस्ठता बणण री कैई। वा नक्कारो करियो ग्रर कैयो—"पृथ्वीनाथ ! ग्रनुस्ठान मे दूसरै पिण्डत नैं ग्रधिस्ठाता बणावो। कार्यक्रम रै बिचाळै जे ग्रधिस्ठाता री मिरतू हुवै तो जजमान रै काम मे बाधा पडै।" ग्रा बात कैवतैं-कैवतैं वा रै ग्रासूं टपकण लाग्या।

राजाजी वा नै कैयो—"मा'राज इया कांई ?"

"ग्रन्नदाता ! ग्राप म्हारी तो निभाय दी, पण एक ग्ररज है कै ग्रो छोरो चावै लायक है या नईं, ग्राप इयै नै निभाया।"

"ग्राप कांई वैम मे पडग्या ? ग्राप केई बात रो फिकर मतो करो।"

ग्रा सुण'र गुसाई जी घरै गया ग्रर तीसरै दिन वै चिर-निद्रा मे सोयग्या। जाणकार लोगा री जबान ऊपर वा री घणी चरचा हुई।



काकूजी

डोवटी री कुरतो, कोरपाण धोती, देसी पगरखी, माथै ऊपर पागड़ी धारण करणआळा काकूजी गोरै रंग रा धणी हा। ठीकसर कद अर कसरत सूं गठियोडो शरीर वां रै लावे जीवण रो कारण हो। बात-बात मे बात कैंवता पण कमाई करण नै करम कदेई साथ नईं दियो। केई जागा नोकर रैया, तगादै री काम कियो, जमाखरच चोखो जाणता। पण पगा रा बखतावर गिणीजता। इयै वास्तै सेठ-सऊकारां रो मन नईं करतो वां नै आपरै अठै राखण रो। सै वां नै नोकर राखता डरता।

वै सैंर मे बड़ै-बड़ै ठिकाणां पर पोंचता, इयै वास्तै लोग वां सूं डरता रैवता कै वै वां री निन्दा कठैई नईं कर देवै। ओ ईज कारण हो कै काकूजी नै केई दान खाना सूं सिरणी मिळ जावती, मोकै-टोकै।

काकूजी ओधार लेय'र पूठो देवणो नईं सीखिया। कैवत ई है—

इयेमौ'लै री आ ई रसम
लेय'र देवण री सव रै कसम।
एक ई जे लेय'र दियो
सगळै मौ'लै नै बदनाम कियो।।

इयै वास्तै वै जलम पतरी देखणआळै नै कैंवता—"कमाई रो जोग नईं हुवै तो कोई चिन्ता री बात कोनी, पण ओधारेस किसो 'क है?" ओधारेस रो मतलब ओधार सूं हो। वै कैवता कै-ओधार मिलबो-करै तो फेर कांई चाइजै। ओधार रो किसो मैणो है? वडा-वड़ा बक

ई तौ, ओधार सूं ई चालै अर फेर मरदा रा देवाळा तो मसाणा मे ई चुकै।

वा नै जे कोई तगादो कर देवतो जणै वै री शान किरकिरी कर देवता। एक दफै एक तगादगीर उवा नै तगादो कर दियो। बस, फेर काई ढील ही उठै ? झट कैयो—"थांरै सेठ रै रुपिया इसा खुडगया है कै–जद सूं एक सो सित्तर रुपिया लिया दोय सै री चीट्ठी लिख 'र, उवै दिन सूं एकै डब्बल री कमाई नई हुई। तूं सावचेत रैये।" आ सुण 'र लोग भेळा हुयग्या पण वो तगादगीर उठै सूं जाय चुक्यो हो। कळकतै रो एक आसामी काकूजी मे रिपिया मागतो हो। वै धीरज सूं रुपिया मागिया। काकूजी वै नै दो दिन बाद रेलघाट आवण री कैई। वै दिन वै उठै सूं रवाना हुवण आळा हा ठीक दिन वो आसामी रेलघाट पूगो। काकूजी डब्बै में बैठा हा। वै नै देख 'र कैयो कै असल अर ब्याज फळाय 'र बतावो। उवै झट बताय दिया। पण वै इया किसा रुपिया देवता ? चीट्ठी देखण नै ली अर गाड़ी रवानै हुवतै ई चीट्ठी नै जरड-जरड फाड दी। वो देखतो ई रैयो। काकूजी चलती गाडी मे ई वै नै कैयो कै नित-नित रो सुख-दुख मिटग्यो। आ चीट्ठी फोड़ा घालती। देखता जणै जी हड़ड़ा लेवतो। अबै हुयां सूं रागी कोनी अर नई हुया सूं चामड़ी काट 'र दिरीजै कोनी।

काकूजी रोज व्यायामसाळा जावता। पण तेल-साबण घर सूं कदेई न ई ले जावता। आतो कई नई, पण वै तो लंगोटा ई दूसरां रा अजमावता। वा री इयै आदत सूं तग आय 'र एक वार उस्तादजी कैयो—' रोज छाती छोलो कदेई सेर भर तेल लावण री मन मे आवै ?"

"मन मे तो कदेई नई आवै पण आप हुकम करो तो सेर भर काई एक सौ एक कर दूं।"

"कांई एक सौ एक कर देवो ? बात्था मे पायली। एक सौ एक तो घणी बात है, पैला एकसेर तेल तो लाय 'र बतावो।"

"एक सेर कांई ? एक पीपो लावूं ला जिको पूरा एक सौ एक हुय जासी।"

"क्या बात करो गैलाई री।"

"वाह माय वाह। इयैं में गैलाई री काई बा हुई? सो मांगण आळा तो है ई, एक तेल रो पीपो भळै ले आइस, जिकै सूं पूरा एक सौ एक लेवाळ हुय ज्यामी।"

"आ बात सुण 'र उस्तादजी वां रो मूंडो ताकण लागग्या।

□□

काकूजी केई नै ई अंटी माय सूं एक डब्बल ई देवणो चावता नईं। वै तो जबान री लपालपी सूं ई काम निकाळता। घणां बरसां री बात है कै वां रै पोतो हुयो। वैं डूमां मे रैवता हा, इयैं वास्तै डूमण्यो झट पौंची, थाळी री झणकार सुणता ई ज। वां काकूजी नै बधाई दी अर आपरी राग अलापण लाग्या। ढोलक ढमाढम खड़कण लागी। लोग आवण-जावण लाग्या। घणी देर गाय'र वै कैवण लाग्या—"खिम्मा अन्नदाता? धिन-धिन थांरा भाग, आज सोनै रो सूरज ऊगियो। धिन धिन हा, तो अबै म्हारी ई सुणाई करो अन्नदाता! म्हैं पाडोसी ई हां। बडी खुसी हुई ।

"बगसीस कांयरी?" काकूजी इचरज सूं पूछियो,

"आपरै पड़पोतां री जागा पोतो हुयो है, म्हांनै घड़ी खुसी हुई है।"

"तो इयैं में कईं बात हुयगी बगसीस री, थैं म्हारी पाडोसण्यां अर हित चावण आळ्यां। थानै खुसी नईं हुसी जद किणनै हुसी? थांमें अर म्हां मैं फरक काईं है अर सरो भरो किसो हुवै कोयनी? थांरै पोतो हुवै जद म्हे आय 'र थारै गाय-बजाय जासां।"

आ बात सुण 'र डूंमण्यां आपरै रस्तै लागियां।

फेर बारी आई पिडण्तजी री। वां वेळा ली, टेवो बणायो अर लिलाड़ मे "सळ घाळ 'र कैयो—"पायो लोवै रो है।"

"तो चोखो कांय रो हुवै?"

"चोखो तो चादी रो हुवै।"

"तो अबै इयैं टेवै मे चांदी रो पायो ई लिखिया। हूं थांरो हूं थैं म्हांरा हो। पोतो आपा रो है, कलम आपां री है, मजासणो अर स्याई

आपारी है, कागद ई आपा रो है फेर लोहे रै पाये री काई मजाल कै अवै लिखीजसी अवै तो चादी रो पायो ई लिखीजसी।" पिंडतजी तो देखण लागग्या।

□□

काकूजी खरी कैवण मे ई नई चूकता, एक दफै एक सेठ हरद्वार मे मरियो। लोग कैवण लागा कै देखो सेठ कित्तो भागी हो कै हर री पेडघा ऊपर शरीर छोडियो। आ बात सुणताई काकूजी पूछियो—"अरे! उठै क्या गिडक को मरैनी ?" कैवण आळै मिनख री मूंडो उतरग्यो।

वै जीमण रा भी प्रेमी हा। एक दफै वै एक बीद रै साथै वै रै सासरै (ज्वाई-जीमण रै दिन) गया। रस्तै मे एक जणै टोकियो कै ज्वांई-जीमण मे तो आप रो जावणो बेवाजबी है। जद वा केकैयो लूं तो साफ मूरख है अरे, बीद तो हमेशा ई बडा हुवै। इयै वास्तै ई तो वै नै बीद राजा कैवै। थारो हियो हाथ हुवैला ? अर थनै आ ठा हुवैला कै बीद जे वडो नई गिणीजै जणै बारै वरसा रै बीद सागै अस्सी-अस्सी वरसा रा डोकरा जान-जीवण नै क्यो जावै ?" अवै कोई वां नै कांई कैवतो ?

काकूजी सूं व्यायामसाळा मे रौनक रैवंती। वै कसरत कम अर बात्या घणी करता। बात्या मे ई रस आवतो। एक दफै अखाडै रै बार मजमो लाग्योडो हो। जमानै री बात्या चालती ही। सगळां कैयो कै जमानो टेढो आयग्यो।

"आ सुण 'र काकूजी बोल्या—"हा-हा, जमानो वडो टेढो आयग्यो। वो जमानो घणो ठीक हो जिकै में भीसमजी वैठा, युधिष्ठर, अरजुन, भीम, करण जिसा दिग्गज बैठा अर द्रौपदी री धोती दुष्ट दुसासण खीच रैयो हो वा चिरळाच रै ई ही पण सै जाणै मिट्टी रा माधो हा। पण आज जे कोई इयां दूसरी लुगाई री हालत करे जणै जावणो पड़ै जेल झट कै दी जमानो टेढो ....।

आ सुण 'सै जणा चुप हुयग्या अर पिछै हसण लागग्या।

□□

काकूजी लोगां नै भोदू बणाय 'र ई आपरो काम काढणो जाणता हा। एक बार वै बाजार जावता हा। हाथ में गूणियो खाली। रस्तै मे

एक हवेली ही। ऐ में वांरा जाणकार वकील साहब रैवता। वै नू'वा ई हा पर काकूजी री पूरी विगतवार सू' मणजाण हा। ऐ गोखे में ऊभा हा। काकूजी नै देख'र पगेलागणा किया। काकूजी मासीस दीवी मर ऊपर गया। वकील साहब कमरे में बैठाया। काकूजी ऊपर-हेठै देखण लागा। वकील साहब पूछियो—"कई' देखण लागग्या ?"

"हू इयै पोथ्यां नै देखू' हू। मै कांई' चीजरी है ?"

"मै फैसला है हाई कोर्टां रा। केई प्रिवी-कौसल रा फैसला है।"

"प्रिवी कौंसल रा ?" इचरज सू' काकूजी पूछियो।

"हां—हां। म्हानै मै पढणा पडै।"

"जणै तो माप विलायत तक रो कानून जाणो। जद ईज तो माप रो नाव हुय रैयो है। मबै बतावो कैरी मा सू'ठ खाई है जिको माप रो मुकावलो करै।" मा कैय'र वै टुरण लाग्या। पण दूसरै ई खण झिझक'र ऊभग्या। पागड़ी रै पेच नै देखै तो खुलो। मूंडो धोळो फक्क हुयग्यो। जबान सू' कैयो—खिसकग्यो ?"

"कांई' हुयो ?" वकील साहब पूछियो।

"हुवतो कांई। चढी पर चढ़ाव, है आज बापजी रो सराध है। घी लेवण नै चोटै जावतो, रसोइयो घरै उडीकतो हुवैला। दस रो लोट हो, खिसकग्यो कठैई।

"कठै पडियो ?"

"मा कांई' ठा। पण मबै घरै कणै जाईस खुडिया खुतरतो। सौर मला मागता सरम तो मावै पण कांई' मुपाव ? हुय सकै तो दस रो एक लोट दे दो, सिद्ध्या नै पूगतो कर देईस। गु'जायस हुवै तो दिया।"

वकील साहब विचारां जेब सू एक लोट दस रो वां रै हवालै करियो। काकूजी वा नै मासीसा देवता पगोथिया सू उतरिया पण वकील सा'ब रो लोट माखर मे लिखीजियो वट्टै-खात्तै।

दूसरै विस्व युद्ध रै समै एक जणै बातां-बात में कैयो कै जापान ऊपर बम्ब रा गोळा पडिया, मा वडी बात हुई। भगवान सुणली। जे कळकत्तै मे राखस इसो कबाडो कर लेवता जणै कांई' बचतो ?"

काकूजी झट बोलिया –"अरे ! शिखर आळें नै फिकर है। पण जे कदास काईं किसी ई हुय ज्यावती तो बचतो कईं कीकर पूछो ? जे हिन्दू हुवतो तो "बचतो गरुड़ पुराण" अर जे मुसलमान हुवतो जणै पढ़ीजतो फातियो।" इयै उथळै नै सुण 'र सगळा जणां हंसण लागग्या।

लारलै दिना मे काकूजी बिल्कुल बदळग्या। बा हरि भजन मे चित्त लगाय दियो। मिलै जिकै नै ई कैंवता कै टिगस तो कटायोडी है, गाड़ी आई कोनी। एक बात और है कै बै तो (यानी जमरा दूत तो) उंतावळ मे आवै अर 'समन' ई बाणिकै में लिखियोडो लावै। इयै वास्तै गलती कर देवै। 'काकूजी', री जागा इयै वास्तै ईज तो कदेई काकाजी नै ले जावै अर कदेई काकीजी नै।

आपा नै आखर एक दिन तो सगळां नै ई मरणो है। ऊभा है जिका नै आडो हुवणो है अर इयै वास्तै जे काकूजी परलोक पधारिया तो इयै मे इचरज किण बात रो ?



दूलजी

सैर रै मांयलै पासै हड़मानजी रै मिंदर खनै एक बाबोजी रैवता हा। गोरो रंग, डींगो कद, भुरचा पडियोड़ो सरीर पण कान्ति सूं भरपूर चै'रो हो, दूलजी रो। घर सूं निसरता जद छोरा 'पगैलागूं बाबाजी, पगैलागूं बाबाजी' कैवण लागता। वै भी रीस जतावता थकां उथळो देवता—"कूड़ा कठैराई, निसरमा टोगड़ जलमग्या। पगैलागूं-पगैलागूं करै। भ्रा नईं मूंभै कै साचैला पगैलागै। भ्रै पड़िया पग, लागै नीं कोई पगै भ्राय'र।" इयां घर सूं निसरतै ई चोळको सुरू हुवतो।

दूलजी मसखरा भी हा। एक दफै एक मंगतै रो पानो पड़ग्यो, उणा सूं। वै गिड़गिड़ायर कैयो—बाबू सा० ! बोत गरीब हूं। दो दिन सूं भूखो हूं। कीं-न-की ....।

वै री बात पूरी सुणियां बिना ई वै भ्रागै बध'र कैवण लागा—"लै, बटका भर लै म्हांरै !"

"हैं ......माई ...... बा . ... प.......!"

"हां-हां सुणली थारी। थारै लारै हूं भगवान सूं बैर मोल लेऊं कांई ?"

"इयैं मे भगवान सूं बैर मोल लेवण री कांईं बात है ?"

"थनै कांई ठा बन्ना ! भ्रजैं सैर में ठग-ठग'र खायो है। भगवान थनै थारै करमां रो फळ देवै भ्रर हूं बीच में थनै जे रोटी-बाटी देऊं तो भगवान सूं बैर मोळ लेवणो हुवै का नईं ?"

बापड़ै मंगतै नै मूंडो उतार'र उठै सूं जावणो पड़ियो।

एक बार बां रै सगै परसंगी मजाक में कैयो—"थांरी माजी रो नातो म्हांरै बापजी सूं कर देवो।"

"घणी चोखी बात कैयी आप ! नेकी अर पूछ-पूछ'र पण ?"

"पण कांई ?"

" 'पण' आ कै थांनै बापजी चाइजै है या नईं ? उफताया हुवो तो आ कै देवो !"

"क्यों ?"

"क्योंकै म्हांरी मां तो मिनख खावणी है। म्हांरै बाप नै ई सरग भेज दियो।"

ओ उथळो सुण'र बो आदमी तो जाणै हिमाळो हुयग्यो। दूलजी थे सगै भर जवानी में हा।

दूलजी घर में दुतरफी चालता। बेटां नै कैवता—"इयै बीदण्यां रो मरगस भरिया करो। बांझयां है अै, नईं तो रोटी सुख री मिलणी मुसकल हुय जावैली।"

अर बेटा नईं हुवंता जद बीदण्या नै कैवता—"हूं तो इया ई कैया करूं हूं। थै रीस मत करिया ना। अै छोरा म्हनै टयू सन कर'र पूरा पइसा थोड़ा ही बोनावै है। थै झाड़ लिया करो, नईं तो अउताई में गमासी।"

दूलजी खुसदिल हा। एक दफै एक दरजी वा री गळी मे दुकान खोलली, वै उण खनै कपड़ै रो थान लेय'र गया अर कैयो—"तू म्हांरै पाड़ोस मे आयो है, इयै वास्तै म्हारो फरज हुय ज्यावै, दो पइसा थनै ई पैदा करावण रो। म्हांरै छोरा रै 'हा-पैंट्यां' सीवणी है। बोल, काईं लेईस ?"

"च्यार-च्यार आना।"

"तो ठीक भला। लै ओ कपड़ो। छोरा नै बुलाऊ।" आ कैय'र वा हेलो मारियो—

"आवो रे भैरिया, गोरिया, काळिया, चूनिया मूनिया, फूनिया, भालूडा ... । हां-हां अठै आवो इयै कारीगर री दुकान में ।"

दूलजी री अवाज सुणतां ई सात जणा दरजी री दुकान मे बडिया । वां नैं देख'र दरजी कैयो कै—"छोरां नैं बुलावो ।"

"अै छोरा खड़ा है नी । नैप लै ।"

"अै छोरा है ?"—इचरज सूं दरजी पूछियो ।

"छोरा नईं तो म्हारा बाप है ? म्हारा बेटा है, अै सातूं । नैप लेवणो पड़सी । जबान सूं तो बेटा-बेटी परणीजै । .....लै जल्दी नैप लै । काल तो इया नैं खेलणो है म्हारी टीम मे ।"

दरजी नैं वां छोरां रै आखर मे सीवणी पडी 'हा-पैंट्यां, च्यार-च्यार आनां मे पण पछै बै नैं वा गळी ई छोडणी पड़ी ।

□□

दूलजी, आप आळां नैं चावता । इयै कारण एक बार वा में घणी खोटी बीती । बांरी जवानी में एक इसी ई घटना घटी । वै आपरी काकी री सीड़ी खातर सिणिया-बांस लेवण गया । सिणिया-बास लेय'र वै सुथारां री गुवाड़ मे पौंच्या अर एक घर रै मोड़ै आगै मेल'र आवाज लगाई—"मिनियो है कईं ?"

"हां, आऊं ।" आ कैय'र मिनियो झट घर सूं बारै निसरियो । पण आवतै ई कैयो—"ओ कांई करियो । म्हांरै घर आगै अै किसा सुगन करो हो ? इयां नैं हटावो परा अठै सूं किरपा कर'र ।"

"म्हैं जाणियो कै तूं घर रो सुथार है, गाता करण री मजूरी रा दो पईसा थनै ई पैदा कराऊं । दूसरै नैं पैदा करावण मे कांईं सार ?"

"पण इयै रा गाता करण आळै रो घर तो सिणिया-बांस री दुकान खनै ई है । आप पूठा उठै पधारो ।"

आ सुण'र दूलजी पूठा टुरिया। रस्तै में लोगां पूछियो—"दूलजी पूठा कियां !"

" या तो उठगी । जीवती मै बाळां कांईं ?"

..... इयां कैय'र आपरी गलती नैं छिपावता वैं गाता कराय'र दूसरे मारग सूं आपरै थानै-मुकामै पौंचिया।

दूलजी रैं एक वेटै कैयो—भा ! अजकाळ चोरयां बहुत हुवै, आपानै ई जाग राखणी चाईजै।

"अरे ओ टोगड़ ! चोर आसी कांईं लेवण नैं। वो आय'र रसोई मांय सूं भूंगळी अर चीपियो भलांई ले जाया। पण और समान लेवण री ताव वैं री नईं पड सकै। जिकै कमरे मे बडसी वै में ई भूत ज्यों सूता लाधसो थे, अर थांरा बीरा।" ओ उथळो दूलजी दियो।

दूलजी दुनियां देखी ही। वै उकत रा पूतळा हा। जीमण जावता जणै आपरै पोतै नै ऐंढो ले जावता। वो बडो दीसतो, इयै वास्तै वैं उण नै 'हार्पेन्ट' पैरायर ई ले जावता। वैं कैवता कै—सूयण सूं बड्डो दीसै।

दूलजी जीमण में तीखा हा। वै कैवता कै पैला मीठो, मीठै सूं खावणो पछै भुजिया सूं वाद में पूड़ी सूं अर आखर मे फेर मीठो, मीठै सूं चलावणो। वैं पूडी रो पुरसारो नईं लेवता। जद कोई पूडी रो पूछतो जद कैवता कै म्है किसा बीमार हां ? पूडी तो (पुंड़िया तो) रोगी लेवै। जद वांरो पोतो पूडी मांग लेवतो तद वैं बकता अर कैवता कै घर मे आटो धाप'र खावै कोनी कांईं ? निठ तो पिण्डो छूटै है आटै सूं अर तूं फेर आटै सूं माथो लगावै अठै ई। जे कदेई वांरो पोतो दईबडा मांग लेवतो तो वैं कैवता कै कांईं चीलड्या खावै है। अै तेल रा चीटा तो घरै ई घणवाय देसूं। छाछ घणी ई मिलै मांगियां सूं। धाप र घरै खायलियै ?

दूलजी पक्का हा। वैं कैवता कै म्हैं घणी-ई ताती-ठण्डी देखी है। जे कच्चो हुवतो तो चौमासा कीकर मैवतो। पडतो जावतो नीं ?

दूलजी कई अटकल्यां जाणता। एक दफै वां रैं वेटै नैं उठावण नैं वैं रो एक साथी—मास्टर आयो। वैं हेला करणा सुरू करिया। पण रात घणी हुयगी ही, इयै वास्तै पूठो उथळो कुण देवतो। दूलजी बार

मिंदर श्राळी चौकी ऊपर सूता हा। झट उठिया अर पूछियो—"कुण हुसी ?"

"ओ तो हूं हूं बाबा।"

"अच्छया मास्टर जी।"

"हां, पगैलागूं। फूनियें सूं बात करनी है। दिनूंगै स्कूल में इन्स-पेक्टर साहब श्रासी।"

"तो इया उठाय लियो फूनियें नैं ? ठैरो, हूं हणैं जगाऊं।" श्रा कैय'र वा हेलो मारियो—

"श्रे फूनियें री बऊ, थारी मां नै बिच्छू खायग्यो,-थनैं तेड़ो श्रायो है।"

श्रा बात सुणता ई फूनियो श्रर वै री ब्रऊ धम्म-धम्म करता हेठैं उतरिया। पण दूलजी झट कैयो कै थानैं उठावण नैं श्रो हेलो करियो। फूनियें रै श्रै साथी-मास्टरजी श्राया है। मास्टरजी देखत ई रैग्या।

जिन्दगी रै लारलै दिनां मे वै कैवण लाग्या कै "हे हड़मान बाबा ! श्रबैं म्हारी सुण ले। इयैं माघ मे श्रावण श्राळै सावैं सूं पैलां म्हनै उठाय लै।"

दो-च्चार बार तो बेटा सुणाई करी कोनी, पण जद वैं उठता-वैठता श्रा-ई बात कैवता जणैं वा रैं बडोडैं वेटै पूछियो कै थानैं काईं तकलीफ है भा ? इयां किया करो श्रजकाळ। कोई बात हुवैं तो फरमावो।

"..तो म्हनैं श्रबै भीत्यां में चिणवासो का देवली वणवासो म्हांरी ? मरणो तो एक दिन है ई श्रर म्हैं तो खूब खाय-पीय लियो। श्रबै न्याल हुय ज्याऊं।"

"श्रा बात तो ठीक है कै एक दिन जावणो तो है, पण श्रापा क्यो फिकर करा, हाकै फिकर करसी जमराजा।"

"पण जमराजा नैं याद दिरावां। कठै ई म्हांरी चीठी ऊंदरा तो नईं धीम लेग्या हुवै।"

"पण भ्रो सावो तो सुख सूं देखलो ।"

"सावा तो घणा ई देखिया । भ्रबै थांरै सुख करणो चाऊं, सावै मे । कारण कै सोग रै ब्यांव मे थांरै खरच कम लागसी भ्रर एक वात भ्रौर है कै म्हांरै पितरामेळै-भाइयैं मे ई थांरै दो तीन सै री स्वार हुय ज्यासी ।"

"काईं कैवो हो ?"

"ठीक तो कैऊं हूं । थानैं ठा हुवला कै भ्रापांरै घर मे चंवरधा मंडसी छव । भ्रर जे हूं सावै रै बाद मरसूं जद छव जंवाई वधसी, जीमण भ्राळा । भ्रर एक-एक जणो दस-दस, बारै-बारै सूं कम साथै नईं लावै । इयैं वास्तै थांरै सौ पूण सै भ्रादम्यां रो खरचो बचसी । रीत-कांसा देवण मे ई वचत हुसी ।" भ्रा वात सुण'र सै खिल खिलावण लाग्या । वा रा बेटा वां रै खानी टुग-टुग देखण लागग्या ।

●

पहलवान साहब

बल बिना संसार में होवै नईं आदर कईं
जर जमी जोरू कदै हरगज बली खोवैं नईं।
हार खाय दुस्मण सूं हरगीज वली रोवै नईं
कुस्ती अर कसरत बिना हरगीज वली होवै नईं ।।

औ टोळघा 'व्यायामसाळा' रै ग्रखाड़ै ऊपर लिखियोड़ी है। उठै रो वातावरण ई इसो हुवै के शरीर नै बलवान बणावण री मन में इच्छ्या हुवै। अर पहलवानां नै 'जोर' करता देख'र तो मन आणंद री हिलोरघां लेवण लागै। सौ-पच्चास उठ-बैठ लगाय'र, दो-च्यार हाथ मोगरघा रा घुमाय'र बूकिया फूलाय'र, मलमल रै चोळै मांय सूं सीनो ताण'र चालणग्राळा, खुरसण्डिया पहलवान तो आप रो मन राजी करिया करै है पण असल मे पहलवान वो ई हुया करै, जिको वळ सूं भरपूर हुवणै पर भी नम्र हुवै, चोखै चाल-चलण रो हुवै अर हार-जीत नै ऊमर भर नही ढोवै।

पहलवाना रो कार्यक्रम ई इसो हुवै जिकै मे कसरत करणी, जोर करणो, खुराक खावणी, ग्रर नींद लेवणी। तीन वज्या भाभरकै उठ'र, निमट'र, कुरला कर'र ग्रादमकद काच रै सामै 'हुं हुं हुं हुं' सुरू हुवै अर भोर हुवण तक ढाई-तीन हजार रो गिड़को लगा'र निचीता हुवै, डंड-बैठक लगाय'र। फेर जोर कराईजै, ग्रायोड़ै छोरा छण्डा नै। ग्रर फेर? फेर दो-तीन जणा नै कमर ऊपर बैठाय'र ग्रखाड़ै में चक्कर लगावणा पड़ै। पण ग्रखाड़ै सूं बार नीसर'र मिट्टी भड़कावतै ई बिदामा नै दूध में छाणियोड़ी

ठंडाई त्यार रैवै । फेर आराम व्यायामसाळा में ई । हां, फेर मालिश रा दो हाथ लगाईजै । अर जीमण नै बैठै जणै पाव-तीनाना घी मे सिकियोडो कवो आटै रो, बिदाम रळियोडो ।

सिझ्या फेर तीन बज्या सूं सागी धन्धो ।

बल रै सागै कळ ई चाईजै । कळ रो काम बळ सूं नईं चालै । आंधो जोर बिना डाव-पेच कईं काम नही आवै । आप रै जोर सूं आप नै ई पडणो पडै, अखाडै मे । इयै वास्तै केई-केई डाव अजमावणा पडै । डाव पेटेंट करण रै सागै-सागै 'काट' रो ई अभ्यास करणो पडै । मुलतानी टाग, काळाजंग, अण्टी, धोबी पछाड, बगळी इत्याद केई डाव पहलवानां रै पेटेंट हुवै । वां रै डाव ऊपर आवतै ई जाणै धड़ाक सूं ढाई मण री बोरी नीचै पडी है । हाथ मिलावता ई पहलवान एक दूसरै नै तोल लै ।

आज-काळ पहलवानी करणी घणी महगी पडै । तीन चीज्यां खावण नै मिलै—लालचन्दजी, डालचन्दजी अर आलचन्दजी—यानी लाल गेहूं, डालडा घी अर आलू रो साग । अबै बताओ, हुसी कसरत ? अर बिदाम रा भाव सुणतां ई 'सीयो-दाऊ' चढै । दूध री जाग्यां मिळै चाय । वै में ई नाप रो दूध—एक कप मे सोळै टोपा । रोटचा मिळै छम-छम्मा भात, चिमच्चै रो लारलो पासो खाली रगडियोडचां । जमी मांय सूं ऊगै कोनी, इत्तै तेल-लूण-लकडी रा भाव जाणणा पडै ।

पण पैलां लोगां नै सौख हो । वै ममै एक पहलवान त्यार हुया—एक छोटी सी बात ऊपर । वां नै आज तक लोग पहलवान साहब नांव सूं पिछाणै । बात आ हुई कै एक वार वा रा पिताजी दंगल देखण नै गया । नामी पहलवानां री एक जोडी अखाड़ै मे लड रही ही । मोकळा जणा भेळा हुयोडा कुस्ती देख रैया हा । इत्तै मे ई एक अवाज गूंजी—"शाबास, काळूसिंघ ।"

आ आवाज पहलवान साहब रै पिताजी री ही । बस बात वधगी अर काळूसिंघ सूं लडणआळै पहलवान तानो दियो कै घरआळै बेटै नै त्यार कर'र लड़ावो, जणै ठा पड़ै । आ बात पहलवान साहब रै पिताजी रै

खटकगी । वै घरै गया अर बेटै नै त्यार करण रो निस्चै कियो । दो च्यार दिना बाद ई बेटै नै आसीस देय'र कानपुर भेजियो । सागै दोय भायला नै भेजिया । रुपिया री कमी नईं ही उठै, भगवान री दया ही ।

पूरै अट्ठारै मइनां बाद वै त्यार हुय'र सैर आया । लोगां री बाक फाटगी, पहलवान साहब रै भीम जिसै शरीर नै देख'र । पिताजी आशीस दी, थुथकारो घालियो, आखर वै पहलवान सूं कुस्ती तै हुई ।

कुस्ती रै दिन अखाड़ै में भीड रो पार नईं । दोनां खांनला त्यार हुय'र पहुंचिया । समै हुयो । दोनूं जणा लंगोटा-कछणी कसियोड़ा अखाड़ै मे उतरिया । वो पहलवान आपरै उस्ताद रै पगै पड'र बोलियो "या अली" अर पहलवान साहब आप रै पूजनीक पिताजी रै पगै पडिया अर अखाड़ै मे कूदता ई "या बजरंगी" री हुंकार करी । फेर कांई ढील ही ? झट सूं हाथ मिलाया अर डाव लागणा सुरू हुया । पैलाआळै पहलवान टाग मारी, पण पहलवान साहब टांग बचाय'र, आंख झंफै इत्ती देर मे ई वै नै उठाय'र इसो जरकायो, जाणै सिला पटकी हुवै, अर एक छिण मे ई चित्त कर'र वै ऊपर बैठ'र बोलियो—"क्यों छोड़ दूं ? हुयगी कुस्ती ?" औ सबद सुणना हा कै जनता अखाड़ै मे कूद पडी अर पहलवान साहब री जै-जैकार सूं आकाश गूंज उठियो ।

वो दूसरो पहलवान ई कम तगड़ो नईं हो, पण जमी जिकै नै वर देवै, वो ई जीतै । इयै वास्तै वै पहलवान, वै दिन सूं ई कुस्ती लड़णी छोड दी ।

पहलवान साहब रो पूरो नांव आसारामजी है, पण वा नै मा'रजा भी कैया करै । कसूंबरा पेचो, धोळो चोलो, गळै में दुपट्टो धारण करण आळा मा'राज हिरदै रा दयालु है । वै ईश्वर रो भजन करै अर हरेक री पीड़ मे आडा आवै । अखाड़ै रै सगळा जणां नै आप रा टाबर गिणै । वै अजै ई जाणै कूदता चालै ।

मा'राज रै जीवण री आ विशेषता है कै इत्ता बडा पहलवान हुवणै पर भी वां कदेई केई सूं राड़-झोड नईं करियो । वां रै खुद रै व्योपार है, गद्दी है अर व्यापारियां मे वां री पूरी साख है ।

एक बार री बात है के मथरा रा दो नामी पहलवान (भाई-भाई) व्यायामसाळा में पूगिया अर मा'राज सूं जोर करण री इच्छया प्रगट की। मा'राज वै समै घर मूं आया नईं हा। इयै वास्तै वां नै ठैराया अर सिझ्या-दिन्'गे मे जोर करावण री बात उठै बैठोड़ा आदम्या कैयी। सैर भला, मा राज नै घरे भट सूचना भिजवाय दी। मा'राज वै समै आखाड़ै नईं गया।

सिझ्या नै सगळा जणा बैठा हा · गप्प-सप्प चाल रैई ही। वै दोनूं पहलवान ई बैठा हा। इतै में ई एक महानुभाव व्यायामसाळा मे बड़िया। वा नै देखतै ई एक जणै कैई—"आवो सेठा, कयों जोर करसो ?"

"विचार तो कम ई है।"

"कांई कम है ? मथरा रा अै पहलवान आया है। मा'राज सूं जोर करणो चावै, पण मा'राज गांव गयोडा है, इयै वास्तै आप ई रमाय देवो, थोडी ताळ।"

"तो सगळा री ज्यां मरजी।" आ कैय'र या कपड़ा खोलिया, लंगोटो कसियो अर कच्छी चढ़ाय'र आखाड़ै मे प्रवेश कियो। वा माय सूं लूंठो पहलवान ई भट त्यार हुय'र कूदियो, अखाड़ै मे। दोना हाथ मिलाया अर जुटग्या। फेर 'सेठां' डाव लगायो अर वो पहलवान चित्त। बस, फेर कांई ढील ही उठै ? भट आवाज आई "व ह-वाह, मा'राज !"

आ आवज सुण'र वै पहलवान नै चेत हुयो कै सेठ दीसण आळ जिण पहलवाण सूं वो लड़ियो हो वै मा'राज ई हा। वो घणो शरमिन्दो हुयो।

मारजा

बालू सूं निसरै तेल चावै ऊट समुन्दर पार जा।
औ सब तो हुय जाय भलांई, भोजन तजै न मारजा।।
मिसरी छोडै मधुरता चावै रैण चांदणी हुवै अमा।
सौ योजन भी दूर होय पण भोजन तजै न मारजा।।

'मारजा' जद गळी-मुहलै सूं निसरै जणै 'पगैलागूं मारजा... पगैलागूं मारजा' री भणकार काना मे पड़ै। 'जीवता रैवो, खुश रैवो' री आशीस मारजा देवता बैवै। वै महाजनी रा घणा जाणकार अर पढावण नै बहुत हुंसियार है। ट्यूशन करणै सूं इत्तो लगाव कै नई केई नै ई कै सकै नही। सित्तर वरसा री ऊमर ताईं दिनूंगै च्यार वजी सूं साढी दस बज्या ताईं चूं चावता रैवता अर स्कूल सू आय'र फेर पाच बजी सू रात नै नव बजी ताईं बाई माळणी, पण फेर ई धापता कोनी, वै। एक री कसर अदीतवार नै निकाळता। आखर सित्तर वरसां में रिटायर हुया स्कूल सूं अर वेटा रै कैयां सूं ट्यूशनां मे कमी करणी पड़ी। अबै च्यार सूं वेसी करण री सोगन खाई है। वै कैया करै कै ट्यूशन करणै आळां रै तीन मइना धातीक हुवै-अक्टूबर, नवम्बर अर दिसम्बर। इण रै बाद जद जनवरी आवै अर दिन बधणा शुरू हुवै, जणै म्हारी खुशी ई बधणी शुरू हुवै।

माथै पर बोदी सीक चोटो जमियोड़ी काळी लम्बी टोपी, स्याळ

धायोड़ो कोट, मैली धोती अर पगां में धां तरै री जूनी पैरियोड़ा अर हाथ में बड़ी घड़ी (टाइम पीस) लियोड़ा मारजा घणा प्रसिद्ध है।

मारजा लेण-देण ई करै। रुपिया मोतार देवण री अर फेर दावा-फरियाद कर'र तामील्या करावण रो वां नै शौक है। वां रो एक बेटो कैया करै कै म्हारै भा जी नै समाजवाद रा अगुवा समझणा चाइजै कै आपरै धन रो पैला सूं ई बटवारो कर दियो, जरूरत मंदा में। पण मारजा ब्याज रो एक टक्को छोड़ण री टैम ई घणा दुखी हुवै। वै कैया करै कै मिनख कमावै आठ घण्टा अर रुपिया कमावै चोईस घण्टा।

मारजा आधा वकील है। वै पैदल कचेड़ी जावै, इयै पिचत्तर री उमर में। जूता पैरण रो अभ्यास नईं। घणा कैवै जणै आजकाळ पगरखी पैरै अर वियै नै आगै जाय'र हाथां में ले ले।

वा नै एक वकील ई इसो मिलियोड़ो है जिको बिया सूं डरै। वो 'पुराणी वकालात' री परीक्षा पास है। वै एक दिन मारजा नै दबी जबान सूं कैयो कै च्यार घण्टा हुयग्या, आपरा दावा लिखतां, अबै कई गरमास तो मगावो। आ सुण'र वा गूजै मांय सूं दोय लौंग निकाळ'र वै नै दिया अर कैयो कै असली गरमास तो इयां में ई है।

मारजा री आदता सूं घणा सी हाकम ई जाणकार रैवै। कदेई इयै रो फायदो ई मिलै। वा (मारजा) एक दफै एक जणै ऊपर दावो करियो। वै मुदायलै जवाबदेई करी कै रुपिया रै पेटै मारजा नै दूध पाय दियो। इयै वास्तै गवाया भुगती। आखर में बहस हुवण लागी। मारजा रै वकील बहस करता थका अरज करी–"गरीब निवाज गवाया सूं तो मुदायलै री जबाबदेई झूठी हुय ई जावै पण आप एक बात रो गौर फरमावो कै मारजा किसी पोसाक पैरै अर वां री आदत काई है? जद मुद्दई दूध पीवणो शुरू कर देसी तो फेर मुदायला नै दूध पीवण रा सोसा ई पड़सी। मुद्दई पईसा बचावै पेट रोम'र अर मुदायला दूध पीवै, रबड़ी खावै अर मौज उड़ावै, वै जिसै मक्कीचूसा खनै करज लेय'र ब्याज रो लोभ देखाय'र।" आखर मारजा जीतिया, वै मुकदमे में।

मारजा आपरै शरीर ऊपर दया नई करै। वै कठैरी ईकेसर आप रै शरीर ऊपर काढ़ै।

एक बार वां-रौ-जेब मांय सूं किणई रुपिया काढ लिया। वै वडा दुखी हुया, पण करता कांई? हा, वै महीनै दस रुपिया री कसर काढी-च्यार री जागा दोय रोटी खाय'र अर सरदी हुवतां थकां ई सीरख नई कराय'र टाट ओढियो, रात्या में।

मारजा री पीडी एक दिन कुत्तै झाल ली, लारै सूं आय'र। पण वा घाव सूं पैली आपरी पछियै जिसी मैलोडी धोती नै सभाळी अर सतोप सूं कैयो-'आई चोखी हुई कै धोती नई फाटी। चामड़ी तो फेर आय जासी।"

मारजा बेटा नै पईसा देवता दोरा हुवै। जद कोई बेटो पईसा मागै अर वा नै देवणा पडै, उपरिया कर जद वै कैवै-"लेय लो वन्ना। म्हैं तो खून बेच'र चादी भेळी करी है। थानै काई जोर आवै, अनाप-सनाप खरच करते। म्हैं तो हाडा रा बिलोवणा इयाई बितोया।"

एक दिन मारजा रै बडोडै बेटै वा नै हेलो करियो-"भा जी, थारै 'मनीओर्डर' आयो है।"

आ सुण'र वै झट हेठै आया अर पूछियो कै कठै है?

वै कैयो-"ओ पुरजो है, कासीरामजी री दूकान रो। छोटोड़ो बेटो आपरो चौतीस रुपियां री ओधार कर'र आयो हो, कपडा री। बियै रो तगादो है। तगादो 'मनीओर्डर' ई तो हुवै कै आप मनी (रुपिया) चुकावो।"

आ सुण'र मारजा चुपचाप रुपिया चुकाय'र भरपाई री रसीद ली।

मारजा हजामत अर दाडी बेटां खनै करावै। कोई पूछै जणै कैवै-"म्हारै केस कठै है? ऐ छोरा केम रासै ई कोयनी। हूं तो भेड हूं, थार्वे जिको ई मूंडै। रुपियां री हजामत करै, जिका नै केसा री हजामत ई करनी पड़ै। किरियावर कैनै करै।"

"थांरा पईसा बचावै" आ वात कैवण वाळां नै वै उथळो देवै कै म्हारा किणरा पईसा बचावै ? मैं आपरा पईसा बचावै ।

मारजा कई चीज नै फालतू नई जावण देवै, इणी वास्तै ई जद वां रो बेटो बीमार पड़ियो अर वै नै मोसम्बी रो रस देवणो पड़तो तो सारलो चूंपो वै आ कैय'र राख लेवता कै– इणी बीनण्यां रै हाथा मे जोर कोय नीं, पूरो रस निसरै ई नई इया सूं, मोसम्बी रो ।

मारजा बेटां नै घणा नई पढ़ाया । वां तो ट्यूशन रो ध्यान घणो राखियो । पर्णां बरसा पैली वा रो वडोड़ो बेटो दसवीं री परीक्षा देवतो; पण नतीजो आवतां ई वै रा नम्बर अखबार मे गायब रैवता, इणी वास्तै वै कैवता कै इणी 'सिवू' नै तो 'बोड' आळा दर्गै सूं फैल कर देवै । वै जाणै कै इया रानै पईसा है, इणी वास्तै फैल करै अगलै साल फीस लेवण खातर । गरीब नै फैल करै तो वो अगलै वरस बैठै थोड़ो ई ? इणी वास्तै पईसां आळा रै छोरा नै घणा फैल करै ।

पण भावी-जोग री वात । वां रै वै बेटै रै नांव रो तार आयो, पास रो एक साल । वै जमानै मे तार बहुत कम आवता । तार आवणै सूं वै वडा राजी हुया । प्रसाद करियो, अर बाटियो घर आळां मे । लिछमी-नाथजी रै मिंदर में ई प्रसाद चढायो अर पौशाक पैरवाई । पण दूसरै दिन एक जणै आय'र तार मागियो । वै कैयो कै काल म्हारै नाव रो तार गलती सूं आपरै अठै तारआळो देयग्यो । आपरै बेटै रो अर म्हारो नाव मिरीसो है ।

"कुण दियो तार थनै ?" मारजा पूछियो ।

"मदनमोवनजी वर्मा ।"

"क्यो, मदनमोवनजी वर्मा थनै ई जाणता हुवैला ? और केईनै ई को जाणैनी । जाअे परो बोलो– वोलो, नई तो तीसरी करांला ।"

वो तो गयो, पण गलती सूं तार आवणै सूं मारजा रो बेटो किसो पास हुवंतो ? नबरा री लिस्ट आई, जिकै मे फैल । मारजा घणी ई लिखा पढी कराई– लिखवायो कै म्हारै पास रो तार आयो है, पण सब फिजूल

रो रामकयाणो हुयो । पागर मारजा बेटे नै कैयो– "म्हैं थनै पैलाई कैयो हो नीं कै बियै रो तार देय दे । नई दियो जणै करवाय भायो नीं फैल ।"

पण एक खास बात है कै मारजा समाज में नेकी रा काम करण नै ई पीछै नई रैवै । 'भाईपा' करता थका अर 'दसणां' करता थकां वै घणा राजी हुय'र जी खोल'र खरच करै ।

मारजा नै बेटा तीरथ-व्रत करण री घणी घंपूणी लगावै जद वै उथलो देवै–"कई है तीरथां मे ? इसी ई लुगायां, इसा ई आदमी, इसा ई ईंट चूनै रा घर, मिन्दर में इसी ई मूरतयां ।" पण घणो दबाव पड़ियो तो वां नै च्यारूं धाम करना पड़िया ।

मारजा नै सरीर मे की चिकणास घालण रो कैवै जद बेटा नै उथलो देवै–"अरे बन्नां, खावो-पीवो थ्है, जिका नै लालचन्दजी, आलचन्दजी अर ढालचन्दजी मिलै[1] म्है तो मोकळी चीज्यां खाई है, हूं लोकां रै किसा कम जीमण जीमियो हूं अर आज ई म्हारै नूतां री कमी नई ।"

मारजा चीज-वस्त कदेई खरीद'र ल्यावै तो घरै आय'र एक टूटी-फूटी ताकड़ी मे तोलै । एक दफै मोठ च्यार सेर फड़ां सूं ल्याया अर तोलिया तो पाव भर कम । फेर कई कसर रैवती उठै ? चेलै चांट्यां नै सागै लेय'र, गमछै में मोठ बांध'र, ताकड़ी-बाट सागै लेय'र फड़ बाजार पोंच्या । दुकानदार दूर सूं ई मारजा नै देखिया अर झट-पट वा रै खनै जाय'र बात सुणी अर वा नै उठै ठैराय'र, पाव मोठ ल्याय'र, माफी माग'र रवानै करिया ।

'मारजा' नै देख'र 'अर्थशास्त्र' रै एक प्रोफेसर साब घणो इचरज करियो । वां कैयो–"म्है तो नाम रा ई अर्थ शास्त्र जाणकार,

---

1 लाल गऊ, आल रो ई आम-अर [illegible]

असली प्रोफेसर तो मास्टर जी है। इयां नै एम. ए. रै छोरां रै सामनै खड़ा करियां असली परखमास्तर ठाकेई समझ में आय ज्यावै।"

आजकाळ मास्टर शान्त रैवै अर गोविंद भजन री बात करै पण पईसा खरचण रै बारै मे अजै ताई तरमीम रत्ती भर ई करी नई। अजै पैवै कै इयै मिट्टी रै बणियोड़ै शरीर मे चायै जित्ता ई चोखा-चोखा पदार्थ घाल दो अर इयै नै कित्तोई सिणगार देयो, पण हुसी आखर राख ई।

परवार बधावण मैं । थे परवार-नियोजन रै खरखिलाफ काम करो। किणई जे रिपोर्ट करदी तो सीधा पींच जावोला।"

वीं दिन पछै बो-"बधै परवार-बधै परवार कैंवणो भूलग्यो।

सुगनजी आपरै बेटै री वरी मे बोरियो अर ठुस्सी लेयग्या। सगे नाक भौं सिकोड़ी जद सुगनजी कैयो-"मालक सा'ब! आप क्यों सोच करो। बाप री वरी अर सुसरै रै दायजै सूं किसी पार पड़ै? अर म्हे बोरियो अर ठुस्सी तो घाली है। "बोरियो अर ठुस्सी, आगै गैणा करावै तो बीन बीनणी री खुसी।"

सुगनजी झट उथळो दे देवै। एक बार एक सेठाणी वां नै पूछियो कै करवा चौथ रो बरत कद है? जद वै झट बोलिया-"इग्यारस नै।"

एक जणै बा नै पूछियो कै भाइयो आपरै कई लागै? वै बिगड'र बोलिया कै-'लागै' जिको काई भूत-भूतणी हैं या कादो-कीचड़ है? कोई चेपै रो थोड़ो ई है जिको लागै?

मोकळा बरसा री बात है कै बा नै एक जणै कैयो कै बाट सा'ब आया है।

"तो गुड सा'ब नै मंगावो अर लाफसी सा'ब बणावो, पछै घी सा'ब रै सागै अरोगो।"

"बाट सा'ब अग्रेज है, आप समझो जिको बाट कोयनी-गेहूं वा रो-" आ बात वै कैवण आळै समझाई।

सुगनजी कलकत्तै ई रैयोड़ा है। उठै वा रामूजी मे घणी खोटी करी। एक दफै एक झाकी ज्यो आवती ही। झालर अर छमछम्मा बाजता हा, भीड आगै वध रैई ही। वै समै रामूजी सुगनजी नै पूछियो कै झाकी कायरी है?

जगन्नाथजी री। थै ई प्रसाद ले आवो, आ बात सुगनजी कैई।

रामूजी भीड में गवा अर प्रसाद लेय'र पूठा आया। वै खावण लाग्या जद सुगनजी मुळकण लाग्या। इत्तै मे ई खनै ऊभै एक मिनख रामूजी नै चेताया कै भ्रो जगन्नाथजी रो प्रसाद नईं है, भ्रो तो मरियोड़ै लारै बाटिजै है। देखो, लारै अरथी आवै है। जद वा री आख्या खुली।

अजकाळ सुगनजी मसकरयां करणी कम करदी। बध तो नईं करी, कारण कै 'बादरो बूढ़ो हुयज्यावै तोई फदाकयां लगावणी थोड़ो ही भूलै।'

हाकम सा'ब

हाकम सा'ब शहर रै चार पायां मायसूं प्रधान गिणीजता हा। वै भणीयोड़ा तो फळसै ताई हा, पण राजाजी री किरपा सूं ऊंचै पद पर आरूढ हुया। फैरूं कांईं हो। वै तो समझ्या कै अबै म्हारो कुण ई कांईं बिगाड सकै? पण राजाजी रै नांव सूं ई डरता रैवता।

राजाजी सूं मिलण नै जांवता जद पैली भैंरूजी नै मनावता। भैंरूजी रै सामनै जाय'र पैली कस्स'र फौजी सलाम देवता अर बाद में आपरा मगर हाथै ई थपथपावता। फेर दोनां खांधां नै थपथपावता। इण रो मतळब हो कै हे भैंरूजी! काळै अर गोरै दोना रूप आळा भैंरूजी, म्हारै सागै हातो, दोनां खाधा ऊपर बैठ'र। म्हारी रिच्छा करीजो। वै बाद में पगोथियै-पगोथियै ऊपर नारेल ई बोलता जावता। पण देवता उणां रै नारेल री उडीक राखता-राखता निराश हुय'र आशा छोड़ देवंता।

हाकम सा'ब मिसल्यां रो फैसलो पेसकार कनै लिखवावता। पण बै हार-जीत रो निर्णय खुद करता। कैया करै है कै फैसला देवण सूं पैला मिसल्यां नै भळी कैर'र वै डैस्क ऊपर राख लेवंता अर आंख्यां बन्द कर'र 'जै भैंरूनाथ-जै भैंरूनाथ' कैवता मिसल्यां नै थपथपावता, जिकी मिसल्या थपथपावण सूं नीचै गिरती बै हारती अर नहीं गिरती जिकै जीतती। हाकम सा'ब कैवता कै कानून तो म्हारी जेब में है।

हाकम सा'ब रै एक बार केई रो ई फोन आयो। पेसकार नैं पूछियो-'किण रो फोन आयो है।'

पेसकार कैयो-'नैनावन्तीजी रो।"

"भला-भला फोन म्हनैं भट-पट। नैनावंतीजी सूं हूं ईज बात करीस।" आ कैय'र फोन लेय'र कैयो-"हां-हां, नैनावंतीजी आप कठै सूं बोलो हो। कई काम है फुरमावो ?"

इत्तै में ई जबाब मिळियो-"हूं नानावती बोल रैयो हूं। लुगाई नहीं, आदमी हूं।"

इत्ती सुण'र हाकम सा'ब खीझ'र फोन पेसकार नै पकड़ाय दियो अर कैयो-"बाळ-बाळ, ओ फोन तो केई आदमी रो है। नैनावंतीजीरो कोनी।"

एक चपरासी कई दिना सूं देरी सूं आवतो इण वास्तै हाकम सा'ब एक दिन कैयो-"वन डे लेट टू डे लेट-डे डे लेट- यू को निकाल देंगे।"

हाकम सा'ब रै पुराणी बग्गी ही, जिकै ऊपर कचैड़ी जावता। रस्तै मे जिको सलाम करतो, उण नै ई बैठाय लेवता। पण आगै जद दूसरो कोई सलाम करतो तो पैलै आळै नै उतार देवता अर दूसरै नै बैठाय लेवता। वै कैवता-"लै भाया सूं उतर अबै, इण री बारी है।" हाकम सा'ब री इण आदत सूं जाणकार लोग इयै वास्तै हाकम सा'ब री बग्गी मे बैठता ई कोनीं।

हाकम सा'ब रै अठै एक वार श्राद्ध हो। श्राद्ध में पिंडत आयो। आंवतै ई हाकम सा'ब पूछियो-"पिंडतजी, आज रै दिन किसी दसा चालै म्हारै।"

"शनि री सा'ब।"

इत्ती सुणनी ही कै हाकम सा'ब पिंडतजी नै होज में गोतो दे दियो। आखर पिंडत नै कैवणो पडियो-"आप रै नही, म्हारै शनि री दसा है आज।" जद पाछो निकाळियो गुचळक्यां खावतै पिंडत नै।

हाकम सा'ब नै एक दफै एक नूवै वकील कैयो-"सा'ब आज रामूड़ै आळै मुकदमें में बेंस सुणवाणी है।"

आ सुण'र हाकम सा'ब जोर सूं कैई–"काईं–काईं, थैंस म्हनै सुणासो ? हूं थैंस सुणीस जणै फैसलो कुण करसो ? थैंस पेसकार नै सुणाम्रो जाय'र ।" वकील देखतो ई रैग्यो ।

एक दफै हाकम सा'ब रै सामनै एक मुलजिम रा इकबालो बयान करावण नै पुलिस पेस करियो । हाकम सा'ब वैनै कैयो–"लै भाया लिखा बयान ।" वै कैयो–"सा'ब, हूं तो बेगुनाह हूं । थाणेदारजी री मार रै डर सूं हामळ भर ली ।"

बस, फेर काईं कील हो उठै । हाकम सा'ब डण्डो लेय'र खड़ा हुयग्या मर कैवण नै लाग्या–"थ्हैं म्हनै थाणेदार सूं हेठो समझियो है कईं कै उण रै सामनै तो डर सूं हामळ भरै मर म्हारो थनै काईं डर नईं लागै" मुळजिम थर-थर कांपण लाग्यो ।

एक बार हाकम सा'ब रै सामने एक मुकदमे में पुलिस आळा "फाइनल रिपोर्ट" पेस की मर मिसल दाखिल दफ्तर करणै री अर्ज करी । हाकम सा'ब रपट कनै मेल ली । लंच रै समै पेसकार नै बुलाय'र रिपोर्ट पढ़वाई । पेसकार पढ़णी सूरू करी–

"सबै मा बैन यह वाका हुआ । ··

इस "··· ·· ··············· ·············"

"बस-बस मागै पढ़ण री जरूरत नईं, हूं समझग्यो । इण मे पुलिस आळां जाण बूझ'र म्हनै फसावण री चाल चली है कै मुलजिमां नै छोड़दूं मर बावलियो (राजाजी) म्हनै खाय जावै । हूं नईं छोड़ूं मुळजिमा नै । सब री मा बैण रै सागै वाका हुवै मर पुलिस आळा लिखै कै छोड़ देवो । हा तो मुलजिम कुण-कुण है पेसकार जी ?"

पेसकार पढ़'र बताया–"सा'ब मगरियै–मगरियै रो नांव बार-बार आयो है ।"

हाकम सा'ब हुकम दियो–"मगरियै मगरियै नै छ: छ: महिना री सजा । और कुण रो नांव आयो है पेसकारजी ?"

"सा'ब एक चूंकियै रो नांव भी तीन-चार बार आयो है ।"

"तो चूंकियै नै ई तीन महिनां री सजा लिख दे।"

हाकम सा'ब फैसलो लिखाय'र बडा राजी हुया अर सिकायत रै डर सूं बचग्या। पण हुवण आळी किसी टळै। इण फैसलै रै खिलाफ अपील हुई।

अपील री सुणाई रै समै सरकारी वकील अर्ज करी–"गरीब निवाज, इण मुकदमै में मुंजरिम कोई है ई नही। इयै वास्तै जेल किण नै भेजा?

'... अगरिया-मगरिया व चूंकिया' मुलजिम नही है, यै तो रिपोर्ट मे आयोड़ा 'अगर–मगर व चूंकि' शब्द है जिकां नै हाकम सा'ब अगरिया, मगरिया व चूंकिया मुलजिम समझ लिया। फेरूं एक बात और है। हाकम सा'ब "शबै मा वैंन" रो अर्थ 'सबकी मा बहिन के साथ' लगाय'र भयंकर गल्ती करी है। शबै मा वैंन रो अरथ "आधी रात में हुवै।"

"बस-बस" जज सा'ब कैयो। अर फैसलो लिख'र सुणायो। फैसलै रै अनुसार अपील मंजूर कर'र बै मुकदमै में फाइनल रिपोर्ट मजूर करली गई। बै फैसलै री एक प्रति राजाजी नै भेजी। फैसलो पढ'र राजाजी हाकम सा'ब नै आपरै घरै भेज दिया।



सेठाणी

"सेठ चावै नाराज हुय जावै पण सेठाणी राजी रैवणी चाईजै"–आ सीख सेठ-साऊकारां रै नौकरी करणै सूं पैला दिरीजिया करै है।

सेठ लाभचन्दजी नामी सेठ हा, पण वां री सेठाणी सगळी तरै सूं वां ऊपर कब्जो कर लियो हो। अर करै क्योंनी ? सेठ किसो चोखो काम कियो कै–सत्तावन वरसा री उमर में दूसरो ब्यांव कियो। पर सेठ बिचारो करतो ई काईं ? एक बात इसी घटी कै वै नै दूसरो ब्याव करणो ई पड़ियो, बात राखण खातर।

बात आ हुई कै एक दफै सेठ जीमतै दही मांगियो। वेटै री वऊ कैवायो कै दही तो व्रयग्यो। खैर, भला। थोडी देर बाद वै रो पोतो आयो अर कैयो कै दही तो आज चक्को-चक्को जमियो। मोळो-गुट्ट हो। हुणै-ई खाय'र आयो हूं। आ सुण'र सेठ रै काळजै तीर लागग्यो। सोच्यो कै अबै हू 'डिच-डिच' री रोटी नईं खाऊं। इण वास्तै बखता-वखत मुनीम नै भेज'र आपरी सगाई कराई अर थोडै दिनां बाद ई ब्यांव हुयग्यो। सेठाणी घरै आई। सेठ नै लोगां रै इण कथाणै री परवाह नईं ही कै–"तेरै वरस री बीदणी, सत्तावन रो है बीद।" चिकू–चिकू थोड़ा दिन हुई अर फेर हुवा भला। 'नूं'वी बात नव दिन अर खाची-तांणी तेरै दिन।'

सेठ सोच्यो कै रोटी तो सुख री मिळसी। सेठाणी गाव री ही अर गरीब घर री बेटी ही। बाप–भाई खेती करता हा।

मेठ रै अठै पूजा-पाठ करण आळा महाराज वागीती सूं आवता। तीन पीढ़ी वा देसी ही, मेठ री। सेठाणी एक बार रीव मे वा नैं पूछ लियो कै बावा हूं म्हारै बाप रै बेटो हुवती तो ठीक रैवती का नईं ?

"हां, ठीक तो रैवतो। फेर पड़ियो एक धोरियै सूं बीजै धोरियै, भायां लारै फिरतो ऊंठ री पूंछ पकड'र अर मीगणा चुगतो रैवतो। अर चैत-वैसाख में पड़ियो फोग बाढतो रैवतो।"

आ सुण'र सेठाणी घणी नाराज हुई पण करै तो काईं करै, कारण कै महाराज सिद्ध गिणीजता।

सेठाणी ज्यों-ज्यों घर री बागडोर संभाळण लागी त्यों-त्यों डेढ-मणी हुवण लागी। तीन नोकरां री जागा एक राखियो। घँ सूं गर्व जित्तो काम लेवंती अर कैवंती कै थारै पगां रै तो मेंदी लागियोड़ी है। जूं री मां ज्यो जाणै जुळै। जावै जठै ई खिडचिप्प हुय जावै।

पण नोकर री विचारै री कांईं कमूर ? पाच-सात जागा आवणो पड़तो, संदेसो लेय'र। हुकम मिलतो-"वैदराजजी रै जाग्रे, रस्तै में वागी बाई रै सदेसो करीजे, मारग मे वाजार पड़ै जठै सू साग ताग्रे, मिरच अदरत्त-धाणा-पोदीणो, चूंगी रा लाग्रे।" दुसी वेळा फेर कैइजतो कै पिण्डतजी नैं कैवंतो जाग्रे कै थांनै बुलाया है। इत्तै कामा री लिस्ट हुवती अर ऊपर सूं झिड़क्या दुनिया भर री। पण नोकर कईं कैवंतो नईं। बो जाणतो कै म्हनै थोडो ही कैवै। 'पगार नै बांवै। कैवण देवो।'

सेठाणी मुतळब में पक्की ही। वा काम पडतो जणै मौठी-मासी वण जावंती। आसागीर केई आवता वै रै खनै। वा महीनै-दोय महीनां काम कढवाय'र फीसियोड़ी अर बोदी धोती धोय-धोवाय'र सांवट-सावटाय'र दे देवती।

सेठाणी आपरै पीहरै आळा नै चावती। वा आपरै भतीजै नैं खनै राखती। वै रा भाई-भतीजा पनपण लाग्या, वै रै सहारै सूं। कैया ई करै-

सासू तीरथ सुसरा तीरथ
तीरथ साळा-साळी ।
वचने-वचने साढ़ू तीरथ
वडा तीरथ घर वाळी ।।

इण वास्ते सेठ तो कंई नई कैय सकतो । सेठ जाणतो तो हो कै भीत नै खाय आळो अर मिनख नैं खाय साळो ।

हां, तो सेठाणी रै भतीजे नै पढ़ावण नै एक मास्टरजी आवता । ट्यूशन री फीस पन्द्रै रुपिया ठैरिया । जद महीनो पूरो हुयो जणै सेठाणी वां नै सात रुपिया भळाया । मास्टरजी एतराज करियो, तद सेठाणी कलेंडर निकाळ'र हिसाब बतायो-"चार दिन आप आया नईं, ''''' इयैं-इयैं तारीखां नै पैंताळीस मिनट पढ़ाई करवाई, इत्ती कसर इयां-बियां हुई ' ' ।"

आ सुण'र मास्टरजी सात रुपिया लेय'र गिड़गिडावता हेठै उतरिया अर वै दिन सूं सेठ री हवेली जावणो छोड़ दियो ।

सेठाणी हुसियारी री कूचो ही । भगवान जाणै सगळी सैणाई वै में ई भर दी ही । वा एक गाय लेवणी चावंती ही, पण वैं री इंच्छया मुताबिक गाय मिलणी मुस्किल ही । वा कैवती कै-चोखी गाय हुवै, कवरी-फूठरी मुठिया सींगी हुवै, सूधी हुवै अर पैलेठण बैड़की हुवैं । दूध तो घर लायक च्यार-पांच सेर हुवणो चाइजैं । लारै टोगडी हुवै तो ठीक रैवै । हुवै जात आळी । ''''''

"मोल कित्तां'क हुवणो चाइजै ?" इयै रो जवाब वा देवती कै मो-सवासै ताई मिल जावै तो लेय लेवां । इयां सामैं-पगा जावां जणै तो गाय आळा मूंडा फाड़ै । वां री बूक घणी बडी हुवै । इयै वास्तै कठैई अव्वै-सव्वै ई मिळ जावै तो ठीक रैवै ।

पण एक जणै आ कैय'र, कै अै सै बातरा तो पांच-छव गायां मे मिळैं, एक मे तो मिळै नईं, सेठाणी री गाय लेवण री बात नै पूर दी ।

सेठाणी रै साकूतै रै बेटै रो ब्यांव हो। वै आपरै अठै आवण आळां नै पूछियो–"थे ब्यांव-शादी में साफा बाधो का पेचा ?"

"साफा बाधा।" आ बात साफा मिलण री आसा में एक जणै कैई। पण उठै किसा साफा मिलता हा। 'काकड़िया कंवळा हुवता तो स्याळिया जदेई खाय जावता।' सेठाणी इण वास्तै झट कैयो–"तो आज सैं जणा साफा बाध-बांध'र आया, मन्नू री बरी में चालणो है।" सै ताकण लाग्या, एक-दूसरै रो मूंडो।

सेठाणी मोर पाखा री सोनो उतारण आळी ही। वा दरजी नै कपड़ो सीवणो देवती जद तोल'र देवती अर कैंवती कै कातर पूठी लाये। वा सीयोड़ा कपड़ा नै अर कातर नै पूठी तोलती। दरजी वै रै कपड़ा में काईं बचाय सकतो ?

पण सेठाणी रै सुख री घडी थोड़ा बरस ई लिखियोड़ी ही। सेठ रो शरीर छीजण लाग्यो। घणी-ई दवायां दिराई अर इलाज करवाया, पण उपाय तो आय रा है। 'खूटी नै किसी बूटी', इयै वास्तै सेठजी पूरा हुयग्या अर सेठाणी नै घणो-सीक जीवन (पुराणी रीत सूं) बुमेड़ै में ई बितावणो पड़ियो।



जीमाकियो

"भूख सूं मरणवाळा री चरचा केई बार अखबारां में छपै, पण घणो जीम'र मरणैं री खबर बहुत ई कम बार छपै"–आ बात रामूजी कैया करै। वै पैला गांव मे रैवता, अबै शहर मे रैवै। रामूजी जीमण रा प्रेमी है अर खावै भी की-न-की विशेष। एक दफै रामूजी आपरै सासरै गया। सासरो गांव मे हो। छोटा ई हा जद। सकै सूं कम जीमिया। दोय-एक घंटां बाद भूख लागी। करै तो कांई करै। टैम बितावणनै एक दूकान ऊपर जाय'र बैठग्या। दुकानदार उणां री गत जाणग्यो, इण वास्तै एक तरकीब भरपेट जीमण री बताय दी।

सिझ्या नैं रामूजी जीमण बैठा। छोटी साळी पुरस'र थाळी लाई। थाळी मे दो फुलका हा। रामूजी एक फुलको निकाळ'र कैयो–"ओ पूठो ले जावो।"

"इत्तै सूं कांई हुसी ?" साळी कैयो।

"तो इत्तै सू ई कांई हुसी ?" ओ जबाब रामूजी दियो।

ईं बात नैं उणा रै सुसरै सुणली। वो समझग्यो। वै रामूजी नैं धाप'र जीमावण री बात घर में कैई। रामूजी धाप'र जीमियो तो सही, पण दिनूंगै ई सीख मिळगी, सासरै सूं।

रामूजी जीमण जावता जद चश्मो लगाय'र जावता। एक दिन एक जणैं मजाक में पूछियो–"थे घणो कियां खाम्रो।" जद वा जवाब दियो–

"देख, म्हारै जीमता थक्यो लागियोड़ो रैवै ! इण सूं जिनस बहुत छोटी दीखै। बडा-बडा लाडू ई पबोड़या जिता-जिता दीसै, जिकै सूं घणा खाइजै।"

रामूजी रै घरै एक दिन श्राद्ध हो। उणा रै एक भायलै कैयो-"आज थे जित्ता लाडू खासो इत्ता ई हूं खाईस।"

"जद थारै मठै आ शर्त लगाया"-आ कैय'र रामूजी चळू कर'र उठग्या। उठतै-उठतै उणा कैयो-"हूं इत्तो मूरख थोड़ो ई हूं कै म्हारै अठै शर्त लगाऊ।"

एक बार एक सेठाणी दोय लाडू अर पांच पूड़यां थाळी में मेल'र, रामूजी रै सामनै राखी। रामूजी सेठाणी नै कैयो-"एक लाडू पूठो तो लेय जावो।"

"क्यों ?"

"तो और कांई करूं ? आपनै पुरसणो ई नईं आवै। रामूजी नै एक पूड़ी घालिजै ? लाडू पैलड़ां पुरसावणी में सात, फेर दूसरी में छव तीसरी वार पाच, चौथी दफै च्यार, पांचवी दफै तीन, छट्ठी दफै दो अर सातवें पुरसारै मे एक घालीजै। फेर रामूजी री इच्छा हुवै तो मांगै जित्ता देवणा। सात वार तो विना मागिया ई पुरस देवणो।" सेठाणी देखती रैई।

एक दफै वै कठैई जीमण गया। थाळी लागी अर वांसैं मे सै चीज्या सामनै आई। रामूजी हाथ लगाय'र देखियो तो माथो ठणकण लागो। पूड़्या बासी अर मिठाई केई दिनां री ही। वै हाथ जोड़'र आख्या मीच'र बैठग्या। अर कैवण लाग्या-"हे ठंडी पूडया, थे म्हारो लारो इसा-इसा सेठ-साऊकारा रै अठैई मत छोडिया ? थे तो म्हारै लारै पडग्या। घर आळी तो सूखा टिक्कड खावण नै देवैई है, अठै जीमण में ई इसी पूड़्या पिण्ड छोडै कोनी।" आ सुण'र सेठ शर्मिन्दो हुयग्यो।

एक बार री बात है रामूजी एक जागा जीमण गया। वै जीमता

हा कै सेठ रो छोटो पोतो बार-बार म्राय'र कैवण लागो–"हूं सीरो लेईस, हूं सीरो लेईस।"

सेठ दोय-तीन वार वैं नैं मांय भेजियो, पण वो पूठो रोवतो म्राय जावतो। म्राखिर सेठ मांय गयो म्रर कैई–"सीरो क्यूं नईं देवो इण पप्पू नैं ?"

"सीरो तो मचै कोयनी"–म्रा वात धीरैं सू सेठाणी कैई।

सेठ म्रा बात सुण'र पप्पू नैं ओर सूं कैवणो सुरू कियो–"रो ना बेटा, रामूजी नैं पैली जावण दे, फेर म्रापां सैं जगा सागै ई बैठ'र रोसां।"

म्रा वात सुण'र रामूजी उठ'र म्रापरै घरै गया।

रामूजी एक वार पैलड़ा शहर में म्राया हा, कचैड़ी रै केईं काम सूं। शहर री टेसण पर उतरिया कै एक जणै म्राय'र कैयो–"म्रापां रै म्रठै ठहरो।"

रामूजी वैं रै सागै गया म्रर उण रैं उठै ठहरग्या। वैं पूछियो–"दूध पीसो या चाय ?" रामूजी दूध ई मंगायो, सोचियो कै चावड़ी सू माथो कुण लगावै।

वो मिनख एक वड़ी गिलास लायो। रामूजी झट गटकायग्या। वैं पूछियो–"फेर लाऊं ?"

"लेय म्रावो।" रामूजी कैयो। इयां करता करता रामूजी म्राठ गिलासां गटकायग्या। फेर निमट'र न्हाया धोया म्रर जीमण नै बैठिया। वैं मिनख पूछियो–"कच्ची रसोई लाऊं का कंईं मीठो-चूठो ई लाऊ ?"

"मीठो लेय म्रावो।"

रामूजी खूब डट'र जीमिया। वैं सोचण लाग्या। म्हारलै वापू रै कित्ता जणा सैंधा है कै इत्ती म्रावभगत करै। वै चळू कर'र म्रापरो थैलो लेय'र रवानैं हुवणनैं लाग्या म्रर कैई–"धन्यवाद है थनैं भाइड़ा। फेर मिलीस म्राय'र।"

"मिलसो जिका तो चोखा पण सात रुपिया दस म्रानां रो बिल चुकाय'र जावो"–वैं मिनख कैयो।

"बिल कांई बात रो ?"

"थां दूध-मिठाई इत्यादि खाया जिकै रो ।"

"तो थे म्हारलै बापू रा रैया कोनी ?" रामूजी इचरज सूं पूछियो ?

"किसो बापू ? ओ तो होटल है–होटल ! पईसा देवो, फेरूं आया आगे ।" रामूजी देखता ई रैया । पण उठै बस कांईं चालै । उण दिन बै मात खायग्या । फेर पईसा चुकाय'र, बिना सोच्यां समझ्यां, घणं खावण री सौगन खायली ।



मुनीमजी

पैला लिखै अर पीछै दै,
भूल पड़ै कागद सूं लै ।

आ बात मुनीमजी री जबान पर रैवती । वै हरएक कलम नैं चौकस देखता । उकत तो वां में घणी ही-ज, जणै ई तो 'हैड मुनीम' रो खिताब मिलियोड़ो हो, यांनै । सेठ रै घर मे छोटै-बडै हरेक काम में वां री सल्ला रै बिना पत्तो ई खड़कतो कोनी ।

केसरिया पेचो, सफेद भक्क बुगलै री जात रो कोट, जिकै मे सोनै री गुंढघा लागियोड़ी छव, नील-पावडर दियोड़ी धोती-आसलेट, कड़प दियोड़ो ऊजळो दुपट्टो अर चूंचदार जूती वां रो पैरेस हो । वै नामी सेठ रायचंद जी रा मुनीम हा । सेठ रै सूत रो धंधो हो अर सागै ई लंधी-किस्ती रो काम ई चालतो ।

मुनीमजी सगळी बात्यां सूं जाणकार रैवता । एक बार सेठ रै रसोइयै पगार बधावण री बात कैई । सेठ मुनीमजी री तरफ देखियो । मुनीमजी समझ्या अर झट कैयो-"ठीक है महाराज ! पगार बधावण री आपरी बात वाजब है । पांच रुपिया आज सूं बधिया समझो, पण एक बात आ हुसी कै आज सूं बाजार सूं चीज-वस्त लावण रो काम दूसरै रै जिम्मै लागसी । थारै आगै ई घणो ई काम है ।"

आ सुण'र रसोइयो ताकण लाग्यो अर धीमै सीक कैंयो-"खैर भला, तो पगार हणै बधावणी नईं सरो । चलै ज्यों ई चलण देवो ।"

एक दफै सेठ खर्च लिखावण नै पानो दियो। रोकड़ियैं पुरजो देखियो अर कैई कै एक छड़ी रा च्यार रुपिया। इसी छड़ी तो हूं बारै आना में लायो हो।

मुनीमजी समझग्या। वां उथळो दियो—"थांरी खातरदारी दूकानदार काईं करी? म्हांनै सरवत पायो, पान खवायो अर जो-जी करी। तेल तो तिला मांय सूं ई नीसरै है अर पईसा तो चैं'रै रा लागै।"

"जणै तो च्यार रुपिया वाजिब ई है। मूंडा देख'र तो टीका काढीजिया ई करै है।"

मौकै ऊपर उकलै जिकी ई उकत। नईं तो "मोको चूकी डूमणी गावै ताल-बेताल।" मुनीमजी री उकत ई इण वास्तै एक दफै सेठजी री इज्जत राखली। वै दिन सेठ यात्रा मे गयोडा हा। दूकान रै नाव री हुंडी, तीस हजार री आई। रुपिया इत्ता रोकड़ी पोतै नईं। बक बंद हुयग्यो हो। रोकडियै हुंडी देखी अर मुनीम रै कानी देखियो। मुनीमजी हेठै गया, तळभंवरै में। उठै सरदी मिटावण नै सिगडी मंगाय'र-तापण लाग्या। रोकडियो हुंडी लेय'र आसामी सागै हेठै गयो। मुनीमजी हुण्डी लेय'र पढण लाग्या। वा कैयो कै आज तो ठंड बहुत है। हाथ-पग धूजैं। पण आपरी हुण्डी हणै सिकर जासी। इया कैवता वा रा हाथ जोर सूं धूजण लाग्या। वा रोकडियै नै हुण्डी देवण नै हाथ वधायो कै हुण्डी हाथ सूं छूटगी अर बोरसी मे याहूती लागगी। वै आसामी रो मूंडो पिलको हुयग्यो। वो कैवण लाग्यो—"अ···र···र··र!"

"अ··र··र··र··र··काईं? आपनै काईं चिन्त्या है। अै तो भारा-कारा है। सळकारी बात आप जाणो हो। 'पैंठ' मंगवाय लो। च्यार दिनां मे आय जासी। रुपिया आपरा असल है, अखरै-अखरै मिळसी।"

"ठीक सा, ठीक! आ कैय'र वो आसामी उठै सूं रवानै हुयग्यो अर मुनीमजी री इण उकत नै सैं जणा दाद देवण लाग्या। सेठ नैं जद इण बात री ठा लागी, जद वै मुनीमजी नै आपरै कारबार मे दोय आना हिस्सै रा पातीदार बणाय लिया।

कुड़छी कलर्क

मूळजी रसोइया हा, पण वै आपनै कुड़छी कलर्क कैवंता । वां घणी सी जिन्दगी सेठ नत्थँजी रै अठै ई गुजारी । सेठ रो सभाव आछो हो, पण सेठाणी डेढ सैणी ही ।

मूळजी नै शुरू-शुरू मे घणो खटणो पड़ियो अर सेठाणी री हकूमत ई सैवणी पड़ी, पण पछै तो वै उण रै माथै बाघण जिसा हुयग्या । मूळजी सेठ साथै बंबई गया, पैला रै जमानै मे । दिनू गै वा दियासळाई री पेटी मांगी जद सेठाणी पेटी देवतां थका कैयो कै—एक महीणै ताई इण नै चलावणी है, साठ काठी है इण मे । वा हामळ भरली, पर मन मे गुळगाठ बांधली ।

तीसरै दिन ई वै सेठाणी नै कैवण लाग्या—"अै लेवो मसालो घिसीयोड़ी काठ्या अर दूसरी पेटी देवो । सील सू सूल्या जगै ई कोनी ।"

सेठाणी नूंवी पेटी देवण नै त्यार नईं हुई, इण वास्तै मूळजी पाडोस आळै ढाबै में गया अर- उठै सूं एक हांडी मे खीरा घाळ'र डोरी सूं वै नै बांध'र आपरी बाड़ी मे आया । उठै सेठ खड़ो हो । वै मूळजी नै कैयो कै इया कांई करो ? जद मूळजी सगळी बात बताय दी । सेठ ऊपर जाय'र सेठाणी नै डाट बताई अर मूळजी नै एक रुपियो दियो, पेट्या खातर । □□

सियाळै रा दिन हा। सेठ मूळजी रै गरम कोट करावण री बात कैयी, पण सेठाणी बीच में ई भचको घाळण नै कैयो—"लारलै वरस श्राळो कोट ई पड़ियो है। इयां नै किसो प्रचार घाळणो है ?"

मूळजी चुप रैया, पण वै दिन, रात नै रसोई बणाय'र निचिंता हुया। सेठ रात नै मोड़ो श्राया करती, सट्टो बन्द कराय'र। वै दिन वो श्रायो श्रर मूळजी उठिया। उठतै ई सेठ डरग्यो श्रर बोकियो—"श्रोव मा " म ए।"

"डरो ना सेठा, श्रो तो हूं मूळियो हूं, मूळियो !"

"इया किया ? उघाड़ो शरीर, राख लगायोड़ी श्रर गमछो बांधियोडो। बात काई है ?"

"कोई बात कोनी। सी लागियो, इण वास्तै केई देर तो तपतो रैयो श्रर जद खीरा बुझग्या जणै सरीर रै राख लगायली, गरमास लेवण नै। म्हैं सोच्यो कै साधु राख लगाय'र सियाळो काढ देवै तो श्रापां ई देखा तो सही।"

सेठ समझग्यो कै—मूळजी रै कोट गरम नईं करावणै सूं श्रा बात हुई है। दूसरै दिन ई, इण वास्तै वां रै कोट रो नाप दिरीजग्यो।

सेठ-सेठाणी सैर श्राया। मूळजी ई सागै हा। सैर मे मूळजी नै दूध लावणो पड़तो। वै भैंस रो दूध लावंता श्रर रस्तै मे कंईं पीय'र वै में पाणी मिलाय'र ले श्रावता। एक दिन सेठाणी दूध छाणियो, जिकै में एक पाणी रो जीव श्रायग्यो। सेठाणी नै इचरज हुयो, पण मूळजी बात सारी कै—दूध श्राळो बापड़ो गरीब श्रादमी है, चोखो पाणी गायां नै पाय सकै नई, इण वास्तै गाय कठैई जसोळाई तळाई में मूंडो घाळ लियो हुवैला।" श्रा कैय'र वै श्रापरै धन्धै लागग्या।

एक बार मूळजी नै सेठाणी पूछियो कै—"एक सेर दाळ रै सीरै मे केशर कित्ती चाइजसी ?"

"एक भरी।"

"एक भरी कांय में लागसी ?" इचरज सूं सेठाणी पूछियो ।

"लगसी जित्ती लगसी, बाकी रो आडबर कढसी ।" ओ उथळो दियो, मूळजी ।

मूळजी मोकळमंवा हा । एक दफै सेठाणी रै मामै रो साळो आयो । वै आपरो आपो दियो अर कैयो कै अै तो आपरै नानाणै कनै ई तो रैवै है ।

"पण हूं तो नईं जाणूं इया नै ।"

"आप म्हनै जाणों नईं ? हूं कावजी रो बेटो हूं ।" वै कैयो ।

"हुवैला वन्ना ! म्हैं तो कावजी रो आगणो तक कदैई नईं देखियो, म्हनै काईं ठा"– ओ उथळो मूळजी दियो ।

एक दफै मूळजी रै पाडोसी रै बेटै रो ब्यांव हो, इण वास्तै गळी मे जलसो सभियो । गळी आळां रै घरा मे पेचा अर गुड फिरियो । घर दीठ एक-एक रुपियो ई दिरीजियो, पण मूळजी रै अठै कंईं नईं पौंचियो । खैर सा ! सिंझ्या नै सेठ रै घर आगै तवायफ रो प्रोग्राम हो । लोग भेळा हुयोडा हा । बिजळी री जगमगाहट हुय रैई ही । इत्तै मे लोगां री नजर ऊपर गई, झाड रै कनै–हालण आळै लालटेण कनै । सेठ ई ऊपर देखियो अर कैयो–"अठै कुण मूरख है ? काईं चांदणै री कमी है, अठै ?"

"हां-हा, है ! घोर अंधारो है, अठै । दियै तळै अंधारो ई रैवै ! नईं तो म्हारै अठै गाड़ो अर रुपियो पेचै समेत क्यो नईं पौंचतो ?"

सेठ वा नै बुलाय'र आपरी गलती मानी अर दिनूंगै ई वा रै अठै मुनीम सगळो रकीणो पूगतो कर दियो ।

मूळजी रै छोरी रो ब्यांव हुयो । जान जीम'र गई । जानण्या घणी सी जीम ली ही, पण गीत गावंती-गावंती फेर कवा गटकाय रैई ही । चीज बघण लागी । मूळजी देखियो कै आज तो इज्जत जासी, इण

वास्तै जोर सूं आपरै बेटै नै कैयो–"अरे भाइया ! मीठै आळा थांमा गिण'र राखे। औ चोर नईं ले जावै। म्हारी जांण में–इयां गूंजा तो मीठै सूं भर लियाई हुसी।" आ सुण'र जानण्यां खळबळ चळू कर लियो। इयां वां री लाज रैयगी।

बाबू साहब

सेठ चुन्नीलालजी नै लोग बाबू साहब रै नाव सूं ओळखता हा। वै बडा आदमी गिणीजता, पण हा भोळा। राजाजी रै अठै वारी घणी चालती। चदो भरण नै वै सगळां सू तीखा रैवता। वै रईस प्रकृति रा जीव हा। हर टेम पांच-सात जणां वांरी हाजरी में हाजर रैवता। केई जणा नै वै पोखता ई हा। गरीब-गुरबा नै ई खाली नईं जावण देवता। वै कैवता कै–"ठगावै जिको ई ठाकर हुवै।"

बाबू साहब एक बार कळकत्तै गया। उठै वै घूमण नै निकळिया। रास्तै मे पिशाब री हाजत हुई। वां एक जागा बैठ'र पिशाब करियो। बित्तै में ई पुलिस आळां वानै पकड़ लिया। कनै ई थाणो हो, जठै लेयग्या। मजिस्ट्रेट साहब बैठा हा। वा रै सामनै बाबू साहब नै पेश करिया। वा, उणां नै पूछियो–"क्यों जी ! पेशाब किया ?"

"हां, हुजूर करियो।"

"तो दो रुपयै जुर्माना। जुर्माना जमा न कराने पर ता बर्खास्तगी अदालत सजा।"

सजा रो नाव मत लो सरकार ! कैद रो नांव ई खोटो। थूको थांरै मूंडै मांयसूं। आ कैय'र मुनीम नै कैयो–"मुनीमजी हाकम साहब बडा दयालु है, बहुत कम जुर्मानो कियो है। आपां रा बीस रुपिया जमा कराय'र रसीद लेय लेवो। काईं ठा, कणै फेर हाजत हुय जावै। दस दफै रो तो पिण्ड छूटै।"

आ बात सुण'र सगळा उणां रै मूंडै कानी देखण लागग्या।

बाबू साहब बीमारी-सीमारी सूं डरता। वै वैदराजजी नै निरोग रैवण रो उपाय पूछता रैवता। एक बार वैदराजजी कैयो कै हवा खावण नै दरवाजै रै बार जाया करो। दूसरै दिन वै वैगा उठ'र दरवाजै बार गया। फाटक पार करता ई वाको फाड'र जोर जोर सूं हाव""हा व"" करण लागग्या। मुनीम देख'र हाको बाको रैयग्यो। पण वो समझग्यो कै सेठ हवा खावै है।

एक दफै मुनीम कैयो कै काले निरजळा इग्यारस है, कई न कई सेवा ले आवा देवा-लेवी नै।

"देवा-लेवी मती करिया, जमानै रो ध्यान राख्या करो। देवा-लेवी पछै काई हुवै ?"

बाबू साहब मौकै-टोकै इसो तक'र तीर मारता कै पूठो उथळो दिरीजणो मुश्कल हुय जावतो। एक दफै री बात है कै उणा री बिरादरी रा लोग गोपालजी रै मिंदर मे भेळा हुया। वै सगळा ई 'बारियो' बन्द करणो चावता हा। सगळा आप-आप री राय दी। बात तै हुवण आळी ही, उण वकत ई बाबू साहब आपरै भाई नै कैयो–"आ सभा किण बात री हुय रही है ? म्हारै तो हाल-ताणी ओ रामकथाणो समझ मे ई नई आयो ?"

'बारियै' नै बन्द करण खातर– ओ उथळो वां रै भाई दियो।

"तो चालो आपां अठै सू। ना तो 'बारियो' करणो आपा शुरू करियो अर ना आपां बन्द करण री राय मे हा। हाफै पईसा खूटियां बन्द हुय जासी। म्हानै जुड़ियो तो म्हां च्यार मिठायां अर मूंग-चावळ करिया अर ऊघाववां घी सागै। अर आज जे गुड़ री लाफसी ई नई जुड़सी तो कठै सू करसां ?" आ कैय'र वै झट उठ'र आपरै भाई सागै बारै नीसरग्या। सै जणा देखता ई रैयग्या।

बाबू साहब नै ग्रोनरेरी मजिस्ट्रेट बणाया, खुश हुय'र राजाजी। वै कचेड़ी मे बैठिया, जाय'र। लोग वां नै 'ग्रनाड़ी मजिस्ट्रेट' समझता हा।

एक दफै पुलिस ग्राळां एक मुलजिम नै पेश करियो। बाबू साहब वै नै देखतां ई खुरसी सूं उठ'र वै नै ग्रापरै बराबर खुरसी ऊपर बैठायो। इण कारण कोर्टजी कैयो—"साब, ग्रै तो मुळजम है।"

"मुलजम ? म्हारै जीवतां ग्रै मुळजम ? ग्रै तो म्हांरा मालक है। सिरदार-मगा है। काईं ईंयां मिनख मारियो है ?"

"मिनख तो नईं मारियो, पण सट्टै रै केस रा मुळजम है।"

"तो सट्टो करणो काईं जुलम है ? सऊकार रा बेटा है, धन सूं धन लड़ावै। ऊंदरै रो जायोड़ो जे बिल नईं खोदै तो काईं करै ? ग्रै चांदी रो फाटको नईं करसी तो काईं कचोळयां बेचसी ?" ग्रा कैय'र मुकदमै नै खारिज करणै रो हुकम सुणायो।

एक दफै वां कनै एक सिफारस ग्राई। उणां कैयो कै म्हनै ईंयां तो याद नईं रैवै, नाम-पत्ता। इण वास्तै तारीख ग्राळै दिन थे डावै कांनी ग्राय'र खड़ा हुय जाया। बस, ग्रा बात याद राखिया।

तारीख ग्राळै दिन वो मिनख कचेडी में बाबू साहब रै डावै पासै जाय'र खडो हुयग्यो। बाबू साहब दूसरी पार्टी ग्राळा नै बुलाया ग्रर हुकम दियो कै डावो जीतियो, जीवणो हारियो। पेशकार वां कांनी देखण लाग्यो, जद वां डाट बताई ग्रर फैसलो लिखाय'र डावै ग्राळै नै जीताय दियो।

बाबू साहब कनै एक दफै एक जणो गयो ग्रर भूं-भूं रोवण लाग्यो। वां उण नै पूछियो—"रोवै क्यो है, काळिया ?"

"म्हारी चौकी पुराणी है ग्रर काल खोदाइज जासी। काल मुनसबोड ग्राळा नैजवा साहब मौको देखण ग्रासी। ग्राप ई मैंबर हो, इण खातर ग्राप भी पधारसो। हूं गरीब ग्रादमी हूं। म्हारै तो ग्रापरो ई ग्रासरो है।"

"ठीक है तो। काल म्हे मौको देखण आसां। थूं हाजर लाधे उठै।"

दूसरै दिन नैजवा साहब सागै बाबू साहब ई मौको देखण पौंचिया। नैजवा साहब रै बोळण सूं पैलां ई बै उण चौकी ऊपर खडा हुयग्या अर कैवण लाग्या–"सा'ब ! इण चौकी ऊपर काळियै री दादी बैठी रैवती। बै रै धोळी दाडी ही। म्है सगळा छोरा बै नै डाकण-डाकण कैय'र चिगावता अर बा गाळयां काढती। बा इयै काळियै री दादी ही दादी। अर साठां सूं ऊपर तो म्है ई जावण लागग्या।"

आ सुण'र नैजवा साहब समझग्या अर चौकी बदस्तूर राखण रो हुकम देय दियो।

वांरा इसा केई किस्सा मुलक में फैलग्या। इण वास्तै एक दफै राजाजी वा नै बुलाया अर कैयो कै बाबू साहब, आप तो कई दुबळा हुयग्या। शायद कचेड़ी री दिक्कत घणी रैवै। आप री मर्जी हुवै तो अबै आप केई दिन आराम कर लो। बा झट हुंकारो भर लियो।

धाड़ैती

मोकळा वरस पैला ठाकर शिवरामसिंघ नांमीं धाड़ैती हा, पण कानून री लपेट मे कदैई नईं आया। धाड़ री टैम, वै केई-न-केई सेठ-सऊकार रै अठै हुवण री सफाई दराय देवता अर धाड़ो ई आपरै राज सूं दूर पड़ावता। वा री मुलाकात बडा-वडा सेठ-सऊकारां सूं ही। केई घरां में वां रो आव-जाव हो अर वा घरां मे वै घरूपणै रो संबंध राखता। वैं हा ई अलमस्त।

एक समै री वात है कै वै सेठा रै दिवानखांनै मे वैठा, गुलछर्रा लगाय रैया हा। एक जणै वारी उमर पूछी। वां वीस वरस वताई। वै पूछण आळै इचरज सूं कैयो–"बीस वरस ?"

"हा–हां, बीस वरस। म्है एक दफै थारै जिसै रै सामनै म्हांरी उमर बीस वरस बतायदी, इण वास्तै अबै जलम भर बीस वरस ई बतावणा पडसी। कारण कै 'मर्दां री जवान एक हुवै।' खैर वै समै म्हांरी उमर ई इत्ती ही।"

इत्तै में ई रामूसा भिचकी लगाई–"ठाकरां थे कांईं धाडो मारो ? धक्को दियां तो पड़ जावो।"

"नईं महाराज, म्हांनै तो लोग इयांई वदनामी देवै। आप ई देख लो कै म्है कांईं धाड़ा मार सकां ?"

रामूसा आ बात इण वास्तै कैयी कै ठाकर लांवा हा। वैं दोखण

में पतळा लागता । कसूंबल रंग रो या चूनड़ी रै रंग रो साफो, कोट पर पीली वां री पोसाक ही । वै देसी पगरखी पैरता । रंग वां रो गोरो हो ।

रामूसा माळी बात बारयां में आई-गई हुवगी । पांच-सात दिन बाद रामूसा सेठ री बग्गी में बैठ'र वै री बेटी रा गैणा देवण नै जावता हा । सिझ्या पड़गी ही । वै हवेली सूं थोड़ी दूर ई पौंच्या हुवैला कै सामनै एक घुड़सवार आय'र डाकल दी–"अरे ओ ! थारै कनै जिकी चीजां है, वै म्हांरै हवालै कर दे, नईं तो नस वाढूं ।"

रामूसा सामै देखियो तो नागी तलवार हाथ में लियोड़ो, जमराज जिसो एक घाटै माळो धाड़ैती दीसियो । वै धूजण लाग्या । बग्गी रै कोचवान रो ई घिग्गी बधगी । रामूसा गिड़गिड़ाया, पण आखर मन मार'र गैणां माळी पेटी देवणी ई पड़ी । काईं करता नईं तो, कारण कै लूंटै रो डोबो डाग नै फाड़ै ।

पेटी लेय'र वो धाड़ैती परो गयो अर बग्गी पूठी हवेली पौंची । सेठां घणो सोच करियो । सैर में ई हूको फूटग्यो ।

दूसरै दिन ठाकर आया । सेठ वा बात टोरी अर रामूसा गिड़–गिड़ाय'र कैयो–"ठाकर साहब ! हू तो डूबग्यो काळी धार । म्हनै रुपिया भरणा पड़सी ।"

"कुण हो ? किसो'क हो ? आप कोई अैनाण-सैनाण बतावो, जद तो कईं ठा ई लगावां ।"

"काईं बताऊ ठाकरां ? "'एक औ डील-डौल आळो धाड़वी हो । घोड़ै ऊपर बैठै-बैठै ई डाकल लगाई । हाथ मे नागी तलवार ही । आ तो नस अर अै बडी-बडी लाल आंख्या । बडो डरावणो हो । हूं तो पूरी नजर ई मिलाय सकियो कोनी ।"

"आप ई डरग्या ? देवणी ही नी थाप री ! आ तो आपरै घर सूं थोडी दूर री ई बात है । इया सिंघा री गुफा मे स्याळिया किया बडग्या ?"

"स्याळिया नईं ठाकरां, वो तो सिंघ सूं ई घणो खतरनाक हो। अबै तो आप संकट काटसो जद ई कटसी, नईं तो म्हनै तो कूवो-खाड करणो पडसी।" आ कैय'र वैं ठाकरा रै पगां खानी बधिया, पण ठाकरां वां नै उठाय'र छाती रै लगाया अर ताळी बजाई। इत्तै में ई बारै सूं एक जणो वा गैणां आळी पेटी लेय'र दिनानखाने मे बडियो। पेटी देखतां ई रामूसा हरा हुयग्या। वै ठाकरा रा गुण गावण लाग्या। पण ठाकरां कैई कै महाराज! म्हनै घणो दुख है कै आपनै कष्ट हुयो, म्हारै कारण। आ कैय'र खिलखिलावण लाग्या। कनै ऊभा जिका लोग भी हसण लाग्या।

शिवरामसिंघ दयालु हा। एक दफै वै एक भूपडै रै आगै सूं जाय रैया हा कै वै मे एक डोकरी नै रोवती देखी। वै, वै कनै गया अर रोवण रो कारण पूछियो। वा बोली—"काईं बताऊं बेटा? हूं तो म्हारै दिनां नै गोता देवती, म्हांरै बिर्वै रा दिन काटती ही कै आज दिनूगै सूं घडी एक पैला शिवरामसिंघ म्हारी सगळी पूंजी खोस लेयग्यो। म्हारा चादी रा कड़ला अर सोनै रा टड्डा वो लेय'र बुवो गयो। कठै पिण्ड छुड़ासी वो इंयां कीड़चा छमक'र।"

"थनै काईं ठा, कै वो शिवरामसिंघ हो?"

"वो कैयग्यो जावतो कै जे रोळो-रप्पो कियो तो ज्यान सूं मार न्हाखूंलो, म्हारो नाव शिवरामसिंघ है।"

आ वात सुण'र ठाकर कैयो कै रो मत माई! हूं थारी चीजा लाय देईस।

"अरे बन्ना! यूं मौत रै नैडो मती जायैना। वो आपरा किया हाफै ई पाय लेसी।"

पण ठाकर उठै नईं रुकिया। वै आपरै साथ्यां नै लेय'र वै चोर नै झट पकड़ लाया अर वै नै बांध'र डोकरी रै पगां मे लाय फैंकियो। डोकरी री रकम्या पूठी दिरोजी अर वै नै जद ई मोनियो जद डोकरी वै नै माफी देय दी। वा साचै शिवरामसिंघ नै ओळख'र गद्गद् हुयगी अर आशीसां री झड़ी लगाय दी।

एक दफै एक धाड़ो पड़ियो–सेठ-सऊकारां रै काफलै नै लूंटियो। वै समै रेला-मोटरां नईं चालती। लोग साथ–संघ मे यात्रा करता। सवारी रै रूप मे वैल्यां रो चल्लो हो। वो सघ ई वैल्या ऊपर जाय रैयो हो। वा नै जगळ मे लूंटिया हा। वां रै माल री गांठड़या बंध चुकी ही। इत्तै मे ई वां रो सरदार आय पौंच्यो। माल देख'र वो घणो राजी हुयो। वो आगै वधियो। देखै तो मिनख-लुगाया, डर सूं कापै। लुगाया एक तरफ खडी ही, घूंधटा काढियोड़ी। करै तो कांईं करै, इमी टैम ?

सरदार विचारां मे डूब्योड़ो कोई दोय-एक कदम आगै वधियो हुवैला कै वै रै काना रै पडदै सूं एक आवाज टकराई–"सिवराम काको है काईं ?" आ सुणतां ई वै सामै देखियो। देखै तो वै रै पगा हेठै सूं जमी खिसकगी। वै रुकियोडै कण्ठ सूं कैयो–"लिखमा !"

वस, फेर सरदार रै गळै सूं बोल को निसरियो नी। वै रै आख्या रा आंसूं, मन री वात बतावता हा।

आखर मे केई तरै सूं सरदार बोलियो–"म्हनै माफ करदे, बेटा ! तूं पैला क्यों नईं बोली ?" फेर लिखमां रै माथै हाथ फेर'र एक सौ एक रुपिया आपरै कनै सूं देय'र सगळो सामान वै संघ रो आना-पाई समेत पूठो दिरायो। वै वा नै काफी दूर तक पौंचाय'र भी आया।

लिखमा वै ई सेठ री बेटी ही जिकां रै अठै उणां री आव-जाव ही। जिका नै वै भायां सूं ई वेसी समझता हा। लिखमां वा रै हाथां मे ई बडी हुई ही।

सरदार रै साथ्या नै वा री आंख्या मे आंसू देख'र अचम्भो हुयो। वा पैली वार, ठाकर री आंख्या मे आंसू देखिया हा।

पिंडतजी

होलजी नै जाणकार लोग पिंडतजी रै रूप में जाणै। वै इत्तो काम करै कै जिकै नै देख'र इचरज हुवै। वै कैया करै कै–"म्है पिंडत ते ई हुंकारै रा, सासरै-पीहरै रा, हामजी-फामजी रा। काम रो कांई छोटो अर कांई मोटो? पोहटो पड़ै तो चूड लेय'र उठै। म्है सेर री ई दूवां अर पाव री भी नई छोडां।"

होलजी आ बात ई कैया करता कै म्हैं दो काम छोडिया है–ऊचै में रसोई अर नीचै में जाजरू झाड़नो। रसोई बणावणी आवै नही, अर जाजरू झाडणो कैणई भोळायो नही।

पिंडतजी १७-१८ वरसां रा हा, जद एक बार गांव में फेरा करावण नै गया। नूंवा भोदा हा, जिकै सूं आठ फेरा दिराय दिया। लुगाया एतराज कियो, जद पिंडतजी नै ख्याल पडी, आपरी गलती। पण वै किसा झटकै मात खावण आळा हा। झट कैयो–"चार फेरा नियम रा अर चार छोरी रो मंगल करडो है जिकै रा।" बात सरगी।

एक बार पिंडतजी कुसालजी सेठ रै बेटै रै ब्याव मे गया। सेठ कैयो–"पिंडतजी, उठै मात मती खाय जाया ना। आपरी धाक नही गुमै। उठै कासी रा पिंडत आवैला।"

पिंडतजी कैयो आप बेफिकर रैवो।

बरात ढूंकी। फेरा री टैम हुई। कासी रा पिंडत पोथ्या खोल'र

बैठा। होलजी भी आपरो पतरो गोनियो अर जोर-जोर सूं आहुत्यां रागावण लाग्या–"उणउणियायै स्वाहा, गुणगुणियायै स्वाहा, मुणमुणियायै स्वाहा, कुणकुणियायै स्वाहा, गुणगुणियायै स्वाहा।" पिंडत चकरायो। इण आहुत्या अर देवतावां सूं वै अणजाण हा। वै समझिया कै पिंडतजी आपां सूं हुसियार है। पिंडतजी री बात सरगी। पिंडतां होलजी रो आदर कियो। वां होलजी नै आहुत्यां रै विषय में पूछियो जद पिंडतजी वा सूं वचन ले लियो कै केई रै ई आगै इण बात री चरचा करोला नहीं। जद पिंडता वाचा दे दिया, जणै होलजी वां नै एकान्त मे लेयग्या अर आपरो पेट उघाड'र कैयो–"ए आहुत्यां तो उदर-वेद री है। हूं तो आपरी कांई बरावरी कर सकूं? इण वास्तै थै आहुत्यां पेट-भरण खातर बणायोड़ी है।"

होलजी साहूकारां रै पाठ-पूजा ई कर देवता अर मोकै-टोकै, सगाई रो टेम-टेवो भी मिलावता। एक बार सेठ दाऊजी रै पोतै री सगाई रै खातर सेठ चूनजी री बेटी रो टेवो आयो। दाऊजी पिंडतजी नै सुबह री टेम, टेवो मिलावण री बात कैई। पिंडतजी कैयो–"सिझ्या मुहुर्त चोखो है, सो मिलासा।" सेठ कैयो–"हुवा।"

होलजी थोडी देर बाद चूनजी री हवेली रै आगै सूं वैया। चूनजी देख'र हेलो करनै, घर मे बुलाया। होलजी घर मे गया। बात-चीत कर'र सेठ, टेवो मिलावण री बात चलाई अर कैयो–"महाराज, आपरी सेवा हूं कर दीम, थोड़ो ध्यान सूं टेवो मिलाया। भै टावर आपरा ई है।"

"ठीक है, पण हूं होलजी बाजू। म्हारी सेवा इक्यावन रुपिया अर एक धोती जोड' सूं हुवैली।"

"वाह महाराज! इक्यावन नही, रुपिया इग्यारह आपरी भेट धर देसूं। इया बात तो पक्की हुयोडी ई है।"

"तो फेरूं टेवो मिलीयो ई है।" आ बात सुणाय'र होलजी आपरै घरै गया। सिझ्या नै वै सेठ दाऊजी री हवेली गया। वै आसण लगाय'र

बैठिया अर टेवो देखण लाग्या। "छोरी तो बडी भागसाली है, बहुत फळसी फूळसी। आपां रै लायक है मा सा पण !"

"पण ? पण कांई ?"

"नहीं–नहीं, सब ठीक है।"

"नही–नही, साफ-साफ कैवो।"

"मा सा। कांई कैऊं ? एक ऐब छोरी में हुसी–कै वा थोड़ी मिनखोकड़ हुसी। पण इयै बात रो घ्यान नईं राखणो, सगाई जरूर करसां। घरांणै रो टाबर पड़ियो कठै है ?"

"नही–आ सगाई हुय नहीं सकै।" आ बात सेठाणी कैई अर टेवो पाछो सेठ चूनजी रै पहुंचग्यो।

एक बार पिडतजी एक सेठाणी रै अठै केई फळ पड़िया देखिया अर कैयो–"सेठांणीजी, ए काकड़िया हूणै गरमी मे कठै सूं आयग्या ?"

"काकड़िया कोनी, अै आंबा है।"

"आबा ? इत्ता बड़ा– ऐ हुवै कांई आबा ?"

"हाँ–हां, आपरै खायोड़ा कोनी कदैई ?"

"म्हारै भाग में आंबा छोड़'र काकड़िया ई लिखियोड़ा कोनी।"

आ सुण'र सेठाणी दोय आंबा पिडतजी नै दिया। वै आपरी तरकीब मे सफळ हुया अर हंसता-हंसता घरै गया।

एक दफै सेठ माणकलालजी आपरी मां रा अस्त लेय'र पिडतजी नै हरिद्वार भेजिया, कारण कै छोरै रो ब्यांव हो जिकै सूं अस्त रैवणा ठीक नईं हा, घर मे। पिडतजी रै कांई जची कै एक दिन दिल्ली में रैय'र दिल्ली मे ईज अस्त पधराय'र पूठा बीकानेर आयग्या। सेठ घणो राजी हुयो कै अस्त ठंडै पाणी पधराईजग्या।

दूसरै दिन सेठ नै सुपनो हुयो। वै पिडतजी नै बुलाय'र कैयो–"महाराज, आप अस्त हरिद्वार मे नही पधराया ?"

"कुण कैवै ?"

"कैवै कुण ? खुद म्हारी मां म्हनै कैयो कै श्रस्त तो दिल्ली में ई पधराय दिया।"

"बिल्कुल भूठ, कत्तई भूठ बोलै है थारी मा।"

"म्हांरी मा तो बहुत करुड़ है। श्राप भूठ बोलो।"

"हूं भूठ बोलूं या थारी मां, इण रो निरणय तो श्रक्ल सूं ई कर कै थारी मां साची हुवती श्रर म्है जे श्रस्त हरिद्वार में नईं पधराय'र दिल्ली में पधराया हुवंता तो बीकानेर श्राय'र थनै क्यों कैवती, वा पाधरी हरिद्वार ई जावंती। इत्तो तो हियों फोड़'र वा सोचती कै दिल्ली सूं बीकानेर नेड़ो है या हरिद्वार।" श्रा कैय'र होलजी उठै सूं रवाना हुयग्या।

एक बार पिडतजी फरसै जी री तरफ सूं एक दीवानी मुकदमै मे गवाई देवण खातर श्रदालत में गया। हाकम नांव–पता पूछ'र कैयो–"कहो नियम-धर्म से सच-सच कहूंगा।" पिडतजी कैयो–"हां, सच-सच कैसूं, नेम-धर्म सूं।" श्रर मन-मन में कैयो– कूड़ै कूड़ै सौगन ली है–कूवै ऊपर कूकड़ी–म्हारी सौगन ऊतरी। खैर, गवाह शुरू हुवण लागी, जद दूलजी कैयो–'हाकम साब, हूं तो फरसैजी रो गवाई हूं। इणां रै फायदो हुवै जिसी बात लिखलो। श्रापनै तो न्याव करणो है।"

श्रा सुण'र हाकम साहब बीच मे ई वां नै टोक दिया श्रर फरसैजी रै वकील रै कैवणै सूं कै गवाह पागल प्रतीत होता है– इत्यादि, मुश्किल सूं पिंड छोड़ियो, इण वास्तै वै कोर्ट-कचैड़ी रै नाव सूं डरता, 'भोळै बामण भेड़ खाई, फेर खावै तो राम दुहाई' कैवता श्रापरै घरै गया। फेरूं कदैई गवाई देवण रो नाव ई नईं लियो।

वकील साहब

"वाक्‌जाळ सूं कीलै, जिको वकील" आ परिभाषा वकील रामपरसादजी री बणायोड़ी है । वै मवकिल्ल सूं पईसा निकलावण में बहुत हुसियार है। वै कैया करै कै म्हनै आ ठा रैवै कै ओ मवकिल्ल म्हनै वकील करसी, वा नही, किता पईसा देसी इत्यादि । वै नीची-नीची अचकन अर चूड़ीदार पायजामो पैर'र कचैड़ी आया करै है ।

रामपरसादजी नै इयां तो सात भो दीखै पण इयै भो में आंख्यां बहुत कमजोर है, इण वास्तै मोटो काळो चसमो हर टैम लगायोड़ो राखै । वै आपरै मवक्किल री तरफदारी करण में कीं कसर नही छोड़ै । एक बार एक मुकदमै में बैस करणी शुरू करण सूं पैली ई वां जज साहब नै कैयो–"सरकार एक अर्ज है कै बैस सुणण सूं पैली मुचळका हुय जावणा चाहिजै ।"

"मुचळका ? कैरा" जज साहब इचरज सूं पूछियो ।

"खिलाफ पार्टी रै वकील साहब रा । कारण कै म्हैं तो कानूनी पैरवी करण रो मैहनतानो ई लियो है अर इयां वकील साहब मरदामर्दी रो मैहनतानो ई सागै लियो है, इण वास्तै म्हनै शांति–भंग हुवणै रो अदेसो है ।"

आ सुण'र खिलाफ पार्टी आळा वकील साहब गूंजण नै लाग्या ।

एक बार वकील साहब कनै एक मवक्किल आयो । वकील साहब वै री मिसल लेय'र अपील लिखाय दी । अपील मे चाळीस वजूहात लिखाया । अर चालीस रुपया मैहनतानै रा मागिया ।

वै मवक्किल पच्चीस रुपिया देय'र कैयो–"वकील साहब हूं गरीब आदमी हूं। पच्चीस रुपियां में अपील आप लडाय देवो। फेर कणई कसर निकाळ देईस।"

वकील साहब पच्चीस रुपिया जेब रै हवालै करतां थकां कैयो–हूं किसो काणो, बाडो, लूलो–लंगड़ो हूं, जिको कसर निकाळ देईस ? म्हैं मे तो कसर भगवान ई राखी कोनी, फेर तूं काई कसर निकाल देईस ?"

"वकील साहब पच्चीस" आ सुण'र वकील साहब वै अपील रै चालीस वजूहात मांय सूं लारला पन्द्रै पांइण्ट काट दिया। अर मुंशी नै फेयर करण नै कागज दिया। इत्तै मे ई वो मवक्किल कैवण नै लाग्यो–'ओ कांई करो हो आप, ए लारला पन्द्रै पांइण्ट काट क्यो दिया।"

"हूं एक पांइण्ट री बहस करण रो एक रुपियो लेऊं हूं। म्हनै पच्चीस रुपियां आळी बैस करवावणी है इण वास्तै चाळीस पाईन्ट थोड़ा ई लिखीजसी ?"

इत्ती सुण'र वै मवक्किल जेब सूं पन्द्रै रुपियां और निकाळ'र वकील साहब नै देय दिया।

पैला वकील साहब वडी-वड़ी मूछ्यां राखता। वै इयै मूछ्यां रो रौब नयै अर भोळै मवक्किल ऊपर झाड़ता। नयै मवक्किल नै कैवता–"देख म्हारै कित्ती वड़ी वडी मूंछ्यां है ? …… अर हूं कदैई नहीं हारियो, जद ई तो इत्ती वड़ी-वडी मूंछ्यां है।"

"मूंछ्यां रो हारण-जीतण सूं काई वास्तो ?"

"वास्तो कियां नहीं। थनै ठा नहीं है कै हाकम री दराज में एक मिसराज[1] रैवै अर जिको वकील हारै वै री मूंछ्यां हाकम काट लै। जिण सूं ई देख म्हारै जिसी मूंछ्यां कंई वकील रै नहीं है।"

वकील साहब म्हारै हारियोड़ै मवक्किल नै कदैई को कैवै नी कै तूं हारग्यो। वै रोगमां सुण'र झट कैवै–'थैं म्हारो काम तो बताओ ?"

---

1 मिसराज–कैंची।

"कियां ?"

"हाकम तिम्बदी कै थ्हारो मुकदमो बहुत पेचीदो है अर म्हारै समझ मे नही आयो, इण वास्तै ऊपर आळै हाकम नै गुणावो।"

एक दिन एक मुकदमै मे वकील साहब तारीख मागी। जज साहब झट सूं कैयो–"वकील साहब! तारीख मैं नहीं दूंगा। तारीख देने की पोथी मैं पढ़ा हुआ नही हूं।"

"बिलकुल दुरुस्त फरमावो हो आप। तारीख देवण री पोथी तो एल-एल० बी० मे पढाईजै है।" वकील साहब उथळो दियो।

जज साहब झेंपग्या, कारण कै वै तो बी० ए० ईज भणियोडा हा।

एक दिन वकील साहब आपरै एक भायळै नै मजाक मे कैयो– "इण महिणै मे तो बहुत खर्च हुयग्यो।"

"कियां ?"

"कंईं बताऊं ? एक हजार रुपिया कमाया कुल जिकै माथ सूं एक सौ रुपिया ई बचिया है म्हारै खनै तो।"

"बस"

"ओर कंईं। कारण ओ है कै एक सौ रुपिया तो पन्ने री मां[1] नै घर खर्च सारू देय दिया अर आठ सौ बैंक मे फिक्सड डिपोजिट मे जमा कराय दिया।

मितर हंसण लाग्यो।

एक दिन वकील साहब रै एक मवक्किल मेंहनतानो मांगणै पर गिड़गिड़ाय'र कैयो–"हूं आपरी गऊ हूं वकील साहब, म्हारै ऊपर मैरबानी करो।"

"नहीं-नही, बिना दूध देवण आळी गऊ नही चाहिजै म्हनै।" ओ उथळो वकील साहब दियो।

आजकाल वकील साहब नै चिन्त्या घेरियोड़ी रैवै। एक दिन म्हनै

1 पन्ने री मां– आपरी धर्म पत्नी।

कैंवण लाग्या कै–"म्हारी लाइब्र`री री किताब्या रो कोई ग्राहक हुवै तो बताया ।"

"आपरी लाइब्र`री रो ग्राहक ? "म्है इचरज सूं पूछियो ।

"और नही तो क्या ? इण किताब्यां री जरूरत नेही अबै म्हनै ?"

"क्यो, कांई वकालत छोड़णी है ?" ·.

छोडणी नही, चालू करनी है नूंवै सिरै सूं ।"

हूं इचरज सू वा रै मूंडै री तरफ देखण लाग्यो कै आखिर बात काई है । आखिर वै समझग्या, इण वास्तै मुस्कराय'र कैंवण लाग्या–"बात आ है कै म्हनै अबै किताब्यां वेच'र एक स्कूटर खरीदणो है, क्योकै अबै कानून री किताब्यां री जाग्यां स्कूटर लेय ली है ।"

"क्यो ?"

"क्यो ?" इण वास्तै कै सुबह सूं ई चक्कर लगाय आऊं स्कूटर ऊपर बैठ'र । आ कैय'र वै चुप हुयग्या ।



सनजी

"सनियोजी घर मे है कांई"–ओ वाक्य सुण'र सनजी कैयो–"वाळ थारै जीकारै नै, तूंकारो ई दिया कर।"

सनजी रो मागी नांव हो, किसनचंदजी। वै घणा चोखा वैद हा। अंगरखी पैरता, पाग बांधता, डुपट्टो राखता अर ऊंची-ऊंची धोती पैरता। रंग सावळो, शरीर गठियोड़ो अर नाक तीखो। बोली रा मीठा। हर टैम त्यार, बुलावणियै रै-। हाथ में छड़ी कुत्तां सूं बचाव खातर।

आडा लोग वां नै वैदजी कैवता। जाणकार व्यासजी ई कैवता। एक दफै री बात है कै वा रै घरै एक जणो गयो अर पूछियो–"व्यासजी घर मे है काईं ?"

"व्यासजी तो मरग्या"–ओ उथळो घर मांय सूं दिरीजियो।

"मरग्या ?"

"हा-हां, मरग्या।"

वो पूठो फिरियो इत्तै मे ई व्यासजी दीसिया। वै सगळी वात बताई जद व्यासजी घर मे जाय'र पूछियो –"म्हारै मरण री बात कुण कैई ?"

"थारै मरण री बात ?" वा रा पिताजी बोलिया।

"हा-हां, हुणै इयै नै जबाव दियो नी, घर मांय सूं।"

"पण वो जवाब थारै वास्तै थोड़ो ई हो ? वो तो 'व्यासजी' रै

वात्तै हो। तूं म्हारै सामनै 'व्यासजी' थोड़ो ही गिणीजै। म्हांरै वास्तै तो 'व्यासजी' म्हारा काकोजी हा, जिका परलोक गया। तूं तो 'व्यासियो' है या 'सनियो' है, म्हारै वास्तै।"

वै देखण लाग्या।

वैदजी घर मे बड़िया ई हा कै वां री घरवाळी बुखार मे पड़ी ही अर "ओय मां ए, ओय मा ए! करती रोवै। वै घर मे बड़ता ई कैवण लाग्या—"ओय सासूजी, ओय सासूजी!"

आ सुण'र वा री श्रीमतीजी उठ'र कैवण लागी —"म्हांरी मां नै क्यूं रोवो हो, जीवती नै?"

"हूं तो थानै सहारो लगाऊं। म्हूं तो थारी बात नै ई दुसराई है। आपा दोनूं जे सागै थांरी मा नै याद करसा, जणै बुखार जल्दी ठीक हुय ज्यासी।"

वै केई रै ई वैसण जावता डरता। वै कैया करता कै—वैसण जावण वाळा रो वै घरवाळा ध्यान राखै कै इयां रै कोई मरसी, जद आपां नै ई बैसण हालणो है, इण वास्तै जपिया कुण बैठावै?

मास्टरजी

"ख्याल वै रै ऊपर ई ढूकै जिको आ समझ लै कै ओ ख्याल तो म्हारै ऊपर है।"

मास्टर दुर्गाप्रसादजी गजब रा आदमी है। काळा-कलूटा, पर वै आपरी हबसी जिसी सकल नै भी सुन्दर समझै। वै आपरी गिणती देस रै इर्ण-गिणै साहित्यकारा मे करै है। हां, जद भी बात करै तो वै में पिचत्तर प्रतिशत तो आपरी बडाई हुवै अर पच्चीस प्रतिशत केई न केई री निंदया।

जद वै मास्टर बण'र घरै गया अर मोडै मे बड़तां ईज चिल्लाया—"हूं बणग्यो हूं", वी समै गाव री ठकराणी बैठी ही सो कैयो—"बणग्यो छै तो घर आळा नै दोरी है, व्हाला!"

"घर आळा नै दोरी ?"

"हां-हा, बणीयो पछै तो यां नै खतरो है, पैला ?"

"कांई बात करो, माजी ? कांई अरथ समझिया आप 'बणनै' रो ?"

"बणग्यो रो अरथ हूं समझी कै तूं 'डाकी' बणग्यो ?"

"नही-नही हूं मास्टर बणग्यो, माजी।"

"तो घणी खुशी री बात है।" आ कैय'र माजी घणी आसिस्यां दीवी।

मास्टर बणिया पछै, दुर्गाप्रसाद जी आपरो धाक जमावन री कोसीस की। वै आपरी ई आपरी कैवता। दूसरै री सुणन री कोसीस ई

नहीं करता। इण वास्तै उणां रा जाणकार वां नै रेडियोजी[1] रै नांव सूं बतळावता।

मास्टरजी मे टचूशन करणै री आदत है। जद वा नै दसवी-इग्यारवीं रा छोरा खास-खास सवाल पूछै जद वै कैवै–हूं इम्पोरटेण्ट-सिम्पोरटेण्ट नही बताऊ। हूं तो पांच-सात सवाल ईज बताया करू हूं अर जिका पेपर में आवै। ओ चिड्या नै जाळ में फसावण रो तरीको हो, मास्टरजी रो।

मास्टरजी एक दफै आपरै सासरै गया। सासरै मे उणां री छोटी साळी घणी राजी हुयी। वा आपरी चूनी रगण खातर काळो रंग लावै ही। पण जद वै जीजाजी नै देखिया तो आपरी मां नै पीसा देय'र बोली–"अबै रंग लावण री जरूरत नईं" क्यूं कै जीजाजी रो हाथ पाणी मे फेराय लेसूं, जिकै सूं पाणी में रग घोळण री जरूरत नही रैवै।" मां-बेटी फेर खिलखिलाय उठ्या।

मास्टरजी एक ईज स्कूल मे कई बरसां सूं है। वां रो ट्रासफर हुय कोनी सकै। कारण कै मास्टरजी रै ऊपर इन्सपेक्टर साहब प्रसन्न है। प्रसन्न हुवण रो कारण है कै एक बार इन्सपेक्टर साहब री भैंस रो पाडो मरग्यो। पाडै विना भैंस दुवावै कीकर ? मास्टरजी उठै ऊभा ईज हा। वै भैंस कनै गया अर भैंस वा नै चाटण लागी अर प्रावसगी। इण वास्तै इन्सपेक्टर साहब सोचै कै मौकै-टौकै मास्टरजी सूं अड़ियोड़ो कांम निसरसी इण वास्तै वा नै उठै ईज राखै।

1 रेडियोजी रो तात्पर्य है– जिको आपरो ई आपरो दळियो दळै, दूसरै री बात सुणै पण नहीं।

योगानन्दजी

कचेड़ी में भगवी अलफी पैरियोड़ा एक महाराज आया करता हा। रंग मुसकी, मूंडो गोळ, नाक लाम्बो, चैरो चिलकतो, आंख्यां चमकदार अर शरीर गठियोड़ो। अस्सी री उमर में ई रोज च्यार-पांच मील रो पैंडो करता। कचेड़ी आवण रो शौक हो, इण वास्तै घणी वार दरसण हुवता, वां रा। हा, हाथ मे छड़ी री जाग्यां लोह रो घोटो राखता, करीब दस-बारै सेर रो। वां रो नाम हो, योगानन्दजी।

"भगवै नै आदेश है"–पण वा नै लोग सिर नवावता वैदगी रा पूतळा समझ'र। इण बात सूं वै खुद वाकिफ हा। वै कैया करता–"म्है भगवा लेय'र भीख मागणी शुरू करी। एक दिन एक जणै मोसो मारियो कै मोटो-तकड़ो जवान है अर माग'र खावै ! इण बात सूं म्हैं सीख लीवी अर वै दिन सूं ही भीख सूं पिंडो छुड़ायो। हूं निठलो बैठणआळो थोड़ो ही हो। इण वास्तै वैदगी रो हुनर सीख'र इण शरीर नै पोषण लाग्यो।"

वां नै बात पर बात घणी ऊकलती। वै विचारक हा। वा रा विचार घणा सुळझ्योड़ा हा। वै बहुश्रुत हा। ओछै विचारां रै दायरै सूं नीसर'र वै विशाल क्षेत्र मे घूमणआळा जीव हा। हरेक संप्रदाय रै साधु-संता सूं वां रा भेटा हुवता।

आपरी वैदगी रै बारै में वै कैवता–"अै वैद अर डाक्टर म्हारी बात काटै। इण वास्तै म्हारै रजिस्ट्रेशन रो सवाल आयो जद म्हतै इणां सूं

टक्कर लेवणी पड़ी । वै म्हनै 'बी-क्लास' में रखावणो चावता, पण म्हैं सगळां रै सामनै वां नै कैयो कै हूं सगळां री पोल जाणूं हूं । हूं घोडै री कमाई नईं खाऊं, म्हारी उकत सूं काम चलाऊं ।"

लोग वां रै बारै में कैवता कै बाबोजी भिलावो या संखियो फूंक'र दैवै । इण रो उथळो वै दिया करता—"थे ठा क्यूं नईं लगावो कै हूं कांई देवूं ? पण एक बात जरूर है कै जिण चीज में मारण री सगति नईं हुवै वै मेजीवावण री शक्ति किण तरै हुवै ? हां, चूरण-खाटा अर जुकाम ठीक करण आळा गोळी-गुटका हूं नईं वणाऊं ।"

वां री केई वाता अजीब लागती । वां रो दवाई देवण रो तरीको तीन लोक सूं न्यारो हो । वा री प्रॅक्टिस ई अलग ढग री ही । जद कोई रोगी वा रै खनै पूगतो अर इलाज करावण री बात कैवतो, जणै वै उणरै खानी गौर सूं देख'र पूछता—"क्यो सगळी जाग्यां जाय आयो ? खैर हूं इलाज करीस ।" फेर वै उणसूं थोड़ी देर बातचीत करता अर आखर मे पूछता—"दवाई ऊपर घी लेसी या तेल ? घी लेवणो हुवै तो घी-ई-घी लेवणो पड़सी, अर तेल री इच्छया हुवै तो तेल-ई-तेल ।"

आ बात सुण'र रोगी सकपकीज जावतो, पण वै कैवता कै घी या तेल नै गळै सूं हेठै उतारण री जुम्मेवारी थारी अर पूठो बारै नईं आवण देवण री ग्रांटी म्हारी ।"

जद कोई पूछतो कै घी खावणो कीकर ? तद वै कैवता कै - खीचडी में, लाफसी में, रोटी मे, दाळ मे, मोठै मे अर थारी मरजी हुवै तो गुटकै सूं । पण एक शर्त है-कै जीमता अथवा जीमण सूं एक घण्टा पैला अर जीमण रै तीन घंटा बाद ताई पाणी पीवण री सख्त मनाई है । इण बात रो पालण करणो बहुत जरूरी है ।

एक दफै एक रोगी पूछियो कै तेल किसो लेऊं, जद वां उथळो दियो कै घासलेट अर मोबिल-ओयल जिसां तेलां नै छोड'र हरेक तेल चलै, जिण सूं कपड़ो चीकणो हुय जावै । कारण साफ है कै आपा नै तो

कपड़ो (शरीर मायलो भाग जिको कपड़ो ई है एक तरै सूं) चीकणो करणो है।

एक वार एक जणै पूछियो कै दूध पीऊं तो ? पण वै झट बोलिया– "थनै ठा हुवेला कै गळनै सूं चावै जित्तो दूध छाणलो, पण गळणो चीकणो नईं हुवै अर घी जे पावानों ई छाणां तो गळनो झट चीकणो हुय जावै। इण वास्तै घी लेवणो चाईजै।"

वां री दवाई ऊपर खान-पान में ऊपर बतायोड़ी बातां रै सिवाय की परहेज नईं हो। खटाई-गुड री मनाई वै नईं करता। वै कैवता कै म्हांरी दवाई ऊपर कैरी रो अचार ई भलांई खावो।

दवाई देवणी सुरु करियां सूं पैला वै फीस रै नांव पर एक लोट लेवता, मूंगो-छम्म–बिच्छू खायोड़ो (सौ रुपियां आळो)।

वा रै हाथ मे जस हो। वै रोगी नै दवाई लेवण रो तरीको ई समझावता। दवाई रै गोळै मांय सूं एक गोळी लेय'र पैलां खुद खाय'र बतावता, फेर रोगी नै देवता। एक दफै वा एक बदहजमी रै रोगी रो इलाज करियो। दवाई देवण सूं पैला, वै नै पूछियो कै वो घी री किसी मिठाई खावणी चावै। वै कैयो कै खावणो तो घणी ई मोतीपाक चाऊं, पण हणै कुण खवावै ? आ सुण'र वा कैयो कै एक खूमचो वडो मोतीपाक रो ढळवाय लै, सवायै घी रो। म्हारी दवाई मोतीपाक ऊपर ई दिरीजसी।

वै कैवता कै रोगी नै जिको चीज रो शोक हुवै वा ई चीज देवणी चाईजै। कारण कै टीक हुया पछै वो वा चीज खावण री इंछ्यां करसी ज अर जे कदास पछै खायां नुकसाण हुय जावै जणै ? इण वास्तै पैलां सूं ई वा चीज खवावणी।

जीमती टेम या जीम'र वाद में पाणी नईं पीवण रै वारै में वै तरक देवता कै कवै नै गिटण नै जित्तै पाणी री जरूरत हुवै उत्तै रो जुगाड़ तो

प्रकृति हाफै ई कर देवै– कवै नै चावतां-चाव्रतां गिटण लायक कर देवै। ग्रर देखो तो सई कै इण बात री ग्यान तो जिनावरा तक नै हुवै, खावती वेळा वै पाणी नईं पीवै।

वै कैया करता कै मिनख हाफै मरै। बीमारी-सीमारी मे ई जित्तै तांई बणै उत्तै ताई मूंडो चलांवतो ई रैवै। इत्ती अकल तो ढाढां में ई है कै थोड़ी-सीक बीमारी हुवता ई वै चारै-पाणी में मूंडो नईं मारै। गाय नै जे मुवाळो हुय जावै तो वा बाटो खावणो बंद कर देवै, चरणो तो बंद करै ई।

वै कैवता कै पैलां ग्रादमी माचै नै झालै ग्रर फेर माचो ग्रादमी नै पकड़ लै।

वै कैया करता कै ग्रादमी उत्तै तांई जीवै जित्तै वो मरणै री मन मे नईं लावै। एक बार वै एक रोगी नै देखण नै गया। वो केई दिनां सूं बीमार हो। वै, वै खनै बैठग्या ग्रर बातचीत करतां थका पूछियो–"कांईं खावण-पीवण री मन मे ग्रावै ?"

"हैं ··· महाराज, म्हारी कोई इंछ्या कोनी।"

"कई पैरण-ग्रोढण री ?"

"नही महाराज !"

"कोई खेल-तमाशो देखण री या ग्रौर कोई इंछ्या ?"

"ग्रबै काई देखा ? ·· लक्कड तो मसाणा में गया।"

ग्रो उथळो सुण'र वै उठै सूं उठिया ग्रर पाधरा वारै गया परा। वै रै घरम्राळा सागै गया ग्रर दवाई री बात पूछी। वा झट कैयो–'म्हारी दवाई कईं काम नईं कर सकै, ग्रबै। जिण ग्रादमी री ससार री कैई चीज मे ई ग्रासक्ति कोनी ग्रर जिको ग्रा बात झाल बैठियो कै ग्रबै म्हनै मरणो है, वै नै ग्रबै कुण बंचाय सकै ?"

ग्रा कैय'र वै ग्रापरै थानै-मुकानै गया।

योगानन्दजी की विशेष जीमता अर कँवता कै भ्रो शरीर तो चोरी है, इणनैं तो भरता जावो जे विना सहारै रैं खडो करणी हुवै तो। आपरै जीवन री एक घटना वां सुणाई। वां कँई कै हूं जद जवान हो तो घूमण रो शौक हो। रोटी खाय'र एक गाव सू दूसरै गांव गयो। दूरी घणी ही। सिझ्या पड़गी ही। अंधारै में हूं गांव री काकड़ ऊपर पौंचियो। एक झूंपड़ै रै बारै खड़ो हुयो अर पाणी मांगियो। झूंपड़ै रैं धणी पाणी पायो। पण पाणी पायो अधूरो। म्है बाल्टी भरियो पाणी जद पी लियो तो वो दौड़ियो उठै सूं अर केई जणा नै सागै लायो। वा डरतां-डरता म्हारै हाथ लगायो। हूं समझ्यो, इण वास्तै म्है कैयो कै डरो मतीना, हू भूत-पलीत नईं हूं। थांरै जिसो मिनख हूं। तिस घणी ही, इण वास्तै पाणी कंईं विशेष पीयो है।

योगानन्दजी दुनिया घणी देखी ही। भारत-भू री यात्रा वा री धाप'र कियोडी ही, इण वास्तै वै पक्का हा। पण वै कचेड़ी नै ग्यान पावण री जाग्यां बतावता। वै कँवता कै वकील गीता रै ग्यान सूं पूरण हुयोड़ा हुवै। वै गैराई सूं श्रीकृष्ण रै उपदेश नै जीवन मे उतार'र जाणै कचेड़ी आवै। देखो तो सई कै जे केई नै ई फाँसी री सजा हुवै तो वकील झट कै देवै कै अपील कर देसां, डर मत। कंईं कोनी। वै तो जाणै निरलेप हुवै। कचेड़ी री तो दुनियां ई अलग है।

वैं कँवता कै जिकी भाषा भण'र सीखीजै वै रैं भूलण रो डर हर टैम रैवै, इण वास्तै वै भाषा नै घोखणी पड़ै अर अभ्यास करणो पड़ै, पण मातृभाषा कदैई नईं भूलीजै। "ऊं? ऊं लोटो। ऊं? ऊं थाळी। ऊ? ऊं मां।............" नैं चावै कित्ताई बरसा बाद पूछ लो, याद ई रैसी।

. योगानन्दजी एक हवेली खरीदी अर वै मे रैवग लाग्या। एक वार एक जणै तानो कसियो जद वां उथळो दियो—"भगवां लेय'र संसार रा

दु:ख छोड़ीजै या सुख ? म्हैं-भगवां-त्रिया है ससार रा दु:ख छोडण-नै; इण वास्तै दु:ख-दु:ख छोड़ दिया ।"

वै डरता केई सूं ई कोनी । खरी कैवण मे वै अचूक हा । वै कम बोलता, पण बोलता जणै सुणण आळो वा सूं प्रभावित हुयां बिना नईं रैवतो । एक दफै किणी वां नै पूछियो कै धोळा क्यो आवै ? वै हसिया अर कैयो कै माथै नै घणो रगड़ियां सूं धोळा आवै । जिको माथै सूं काम ई नईं लेवै वै रै धोळा नईं दीसै अर धोळा सूं किसो बुढापो गिणीजै । भेड़ रै जलम सूं ई धोळा हुवै अर बकरी रै मरै इत्तै ई धोळा नईं हुवै ।

जीवण रै आखरी दिनां मे वै निरळेप हुय'र रैवण लाग्या । आपरी जायदाद सूं मोह हटाय'र वै निजोखवा हुयग्या अर दो-एक दिना री साधारण हरारत सूं ई इण संसार सूं विदा हुयग्या ।



सेठ

"दोय घडी तो रतन सेठ वण ज्याव– " आ बात बूढा-बडेरा सीख देवण नै कह्या करै है। वै सेठजी जिसो दानी अर उदार बणण री बात रै सागै ई वां रा कई पुराणा किस्सा ई बतावै।

सेठ सेठ ई हा। गंठियोडो शरीर, गऊं भरणो रंग, केसरिया पेचो माथै ऊपर अर डुपट्टो खान्धै। सवारी खातर बग्घी, टमटम या चौपइयो।

गरीबां री सुणणआळो, बात रो धणी, नेम रो पक्को, उखत रो पूतळो, सेठाई रो सरूप पण सादगी रो रूप अर भगवान रो भगत हो सेठ। आ बात ई बडेरा कैवै।

शिवजी रा भगत हा वै—सेठ रामरतनजी। वां नै 'रतन सेठ' ई कैया करता।

वै नेम बन्धा काशीविश्वनाथजी रा दर्शन करण नै जावता। वै दिनां मन्दिर उजाड़ में हो। दरवाजै बार बस्ती ही कोनी।

एक दफै वै आधै रास्तै पौंचिया ई हा कै चार जणां-वां री बग्घी नै रोकी। वां रै हाथां मे बन्दूकां ही। सेठ वा नै कह्यो—"कई बात है?"

"म्है थारा गैणां लूटसा।"

"तो इया करो कै आज अढ़ाई बज्यां दीवाणखानै आय जाया, हूं थ्हांनै इण गैणा री कीमत चुकाय देसूं। डरिया मती ना।"

"अर जे पकड़ाय दिया तो?"

"नई, आ बात घोखैआळी, भावै न भांतरै।"

वा लुटेरां वात मान ली । वां कै दियो कै जे गड़बड़ करसी तो काल देख लेसां । एक जणै नै दीवाणखानै भेजसा ।

अढाई बज्यां एक जणो दीवाणखानै पूगियो । सेठ उण नै गैणां रै बरोबर रुपिया गिणवाय दिया अर गैणां (सांकळ, पौंतरी, बींटी इत्यादि) रो संकळप भर दियो, आपरै गुर नै ।

सेठ गरीबां री इज्जत राखता । वै, जिण घर मे मरणो या परणो हुवतो, उण घर मे रात नै रुपयां री गाठडी फेंकवाय देवता । वै भाईपै-आळा री आर्थिक स्थिति सूं जाणकार हा ई, इण खातर वा री दोरी वखत मे ई काम सराय देवता ।

एक बार री वात है कै वां री बिरादरी मे एक डोकरी 'धाम' गई । सेठ वै रै घरै बैसण नै गया । 'बतळावण' कर'र वा कह्यो "थ्हांरी मा ही जिकी म्हारी मां ई ही । थ्हूं अर हूं, किसा दो हां ? डोकरी रा सुधारा हुवणा चाईजै ।"

"सुधारा हुय जासी, आपरी कृपा सूं ।"

"म्हारै लायक कोई काम-काज हुवै तो बताव ।"

आपरी दया सूं सब ठीक है पण हूं बारियै मे लाफसी वणवाणी चाऊं । 'दूवो' मिलणै सूं बात पार पड़ै ।"

"दूवो मिल जासी । चिन्त्या मती ना कर ।"

जद भाई भेळा हुया तो सेठ उण नै दूवो दे दियो ।

'बारियै' रै दिन, भाई जीमण जावण मे आनाकानी कर रह्या हा । पण जद सेठ जीमण नै गया परा फेर भाई कियां अड़ता ?

सेठ जीमण बैठिया । कवो लेवतै ई कह्यो—"वाह भाई, वाह ! भारी मेवै री खीचड़ी बनाई है ।" आ कैय'र जीमिया । सै जणा वा री महानता नै सरावण लागा ।

सेठ छोरां-छण्डा नै ई राजी राखता । वै वाळकां मे भगवान रो रूप देखता । दस-बीस दिना रै आतरै सूं वै चोकआळै पाट माथै बैठा-बैठा, छोरा नै बुलावता अर पूछता—"हणै तो गोठ-पछाड़ी करी कोनी ?"

"हैं बाबाजी ······ पईसा भेळा ······ ।"

"तो आज 'नरसग सागर' माथै गोठ हुसी । सामान उठै पूग

जासी । म्हारै रसोइयै सूं मिल लो । गाडी भाडै कर लाग्रो। पईसा दीवणखानै सूं ले लो।"

"छोरा राजी हुवंता, फेर वै कैवता "अर म्हानै तो नूतो दियो ई कोनी। फेर हूं भिळ' र आऊंला।"

"आपनै नूतो देवण री ताकत किण में है? आप तो मालक ई हो।"

फेर वै घरै जावता अर रसोइयै नै कैवता—"आज गोठ है छोरां री तरफ सूं। इण खातर चीज चोखी सू चोखी वणावणी है। म्हनै जीमती टैम तो कई भाय नही सकै इण कारण कासो ई पुरस लियै। हां म्हारी बाई नै ई गिण लियै।

सेठ जाणता हा कै रसोइयै रै आगै-लारै एक विधवा बैन है। इण वास्तै पैला सूं ई बै नै गिण लेवता।

सेठ साधु-सन्तां री सेवा ई किया करता। एक दिन वां खनै एक साधु गयो अर कह्यो—

"लालन के लाल, मंगवादे माल
फक्कड़ का हाल झोला भर दे।"

"किसी चीज चाईजै अर कई चाईजै, आप साफ-साफ हुकम करो।"

"जिण चीज सूं चावै, उण सू ई म्हारो ओ खप्पर भर दे।"

"भरणो-वरणो हूं नई समझूं। म्हनै तो आप हुकम फरमाय दो।"

"हूं चाऊं कै म्हारो खप्पर भरयो जावै।"

"हूं ई निवेदन करूं कै आप तोल अर चीज वतायदो।"

इण तरै हुज्जत हुवण लागी अर आखर मे साधु आ कैवतो बारै नीसरग्यो—"कोई अव्वलियो आयग्यो इण खोळियै में। पोचियोडो जीव है, पोचियोड़ो।"

बात आ ही कै साधु भी महान् हो। जे उण रो खप्पर भरणो सुरू करीजतो तो वो खप्पर भरीजतो कोनी। वा तो परीक्षा ही परीक्षा सेठा री।

वा री हुण्डी चालती। एक बार वै काशीविश्वनाथजी रा दर्शण करण नै जावता हा। रास्तै में एक याचक मिलग्यो। वा कनै कागद अर कलम ही कोनी अर जबानी कह्या मुनीम याचक नै रुपिया देवतो नई

इण खातर वां एक तरकीब सोची । वां रास्तै सूं एक ठीकरी उठाई अर कोयलै सूं लिखिया - १००) रु० दे देना । कः रामरतन ।

वो याचक दीवणमानै गयो पण मुनीम वै नै रुपिया दिया कोनी । वो पूठो काशीविश्वनाथजी रै मिंदर पूगियो । सेठ वात सुणी अर रकम १००) रु० रै लारै एक मीण्डी ग्रौर जोड़ दी ।

वो मिनख फेर हवेली पूगियो पण मुनीम फेरूं ई वै ने रीतो काढियो । वो वारै नीसरियो ई हो कै सेठ रो भाई मिलग्यो । उण वात समझी अर वै याचक नै रुपिया एक सौ देय'र, राजी कर' र, रवानै करियो ।

सेठ री जवान जाणै 'खुलो चैक' ही । वै आपरी मा रा अस्त लेय'र हरिद्वार गया । उठै विधि-विधान सूं अस्त पधराया । फेर पण्डै दक्षिणा मागी । वा कैयो—"हुकम फरमावो ।"

"एक सौ एक ।"

"संकोच मती करो।"

"पाच सौ एक।"

"फेर ई आप संकोच करग्या ।"

इण बात माथै पण्डै ने इचरज हुयो । वै समझियो कै सेठ दपोळ-शंख ज्यो वात करै है । वै इण खातर कैयो—"पांच सौ एक मोकळी रकम है ।"

आ सुण'र सेठ एक हजार एक रुपिया गिणवाय'र भेंट करी पण्डै रै । वो देखतो ई रैग्यो अर घणी आसीसा दीवी ।

मुनीम सेठ नै सिझ्या नै पूछियो कै जे - कदास पण्डो एक लाख रुपिया मांग लेवतो जणै ?

"मागिया क्योंनी ?"

"जे मांग लेवतो तो ?"

"तो म्हारै भाग रा थोडी नै मांगतो ? मागतो तो आपरै भाग रा ई । आपरै भाग में जित्ता लिखियोडा है उत्तै सूं राई घटै न तिल बढै ।"

मुनीम देखतो रैग्यो जद सेठ कही—

"करमां सार मिलै आटो
रामजी रै घर में कईं घाटो ?"

इसा हा सेठ । आज वा रो पाथिव शरीर इण असार सतार-मे नी है पण यश रूपी शरीर नै कुण नष्ट कर सकै ?

न्यायमूर्ति

न्यायमूर्ति बैजनाथदासजी रो नांव तत्कालीन बीकानेर रियासत री न्यायपालिका रै इतिहास में अमिट है। वै 'हाई कोर्ट' रा जज हा अर न्याय करणो वां रै जीवन रो ध्येय हो। वै सत-असत रो निरणै करण में कीं कसर नी छोड़ता।

वै आपरो जीवन एक सन्यासी ज्यां वितावता। एक तारीख नैं वेतन री रकम मिलण सूं पैलां ई वां रो पेसकार आधी रकम रा 'मनी-आर्डर फार्म भर राखतो। वा रकम, आपरै घरै नईं पण धर्मार्थ री जाग्यां भेजी जावती।

वै बोली रा मीठा हा। दीमत रा भोळा अर हृदय रा साफ। घरै मिसल्यां ले जावता अर पढ़'र पेशी रै दिन त्यार रैवता। वै मुकदमैं री तह ताईं पोंचता।

वै ठीक समै कचेड़ी पूगता। ज्यों ई घडी दस रा टंकोरा बजावती, वै अदालत में कुरसी माथै जाय जमता। पेस्यां करतै समै वै गम्भीर अर शान्त रैवता। बीं वखत रा वकुलाय कह्या करै है कै वा कदेई गुस्सो नी करियो।

वै सिफारिस किण री ई नईं सुणता। एक वार री बात है कै एक 'महानुभाव' री चीठी वां नैं लाय'र चपरासी दीवी। वां, उण चीठी नैं बिना खोलियां ई जेब में मेल ली। फेर आप रै काम मे लागग्या। काम निपटाय'र जद चैम्बर मे जावण लागा जद वा चीठी खोली अर पढ'र जवाब लिखायो—"मुझे अफसोस है कि आज के मुकदमों के फैसले लिखाने

के बाद आपका पत्र खोला गया।" इण तरै वा सई बात लिखाई।

वै एकला ई बीकानेर मे रैवता। कोठी में वै अर वा रो नोकर रैवता। जद कोइ वा सू मिलण नै जावतो अर बारै सूं घंटी री बटन दबावतो तो वै खुद ई बारै नीसरता अर पूछता—"क्यों भइया! कैसे आये?"

"साहब। काल म्हारो ......

बात नै पूरी सुणण सूं पैला ई वै कैवता:—"अच्छा, ...अच्छा भइया! कल दस बजे कचहरी मे मिलना। अच्छा"...आ बात कैवता थका वैं फाटक बंद कर'र पूठा कोठी मे परा जावता।

अर बीजै दिन किण री हिम्मत ही कै वा सूं जाय'र कचेड़ी मे भेटा लेवतो? वैं तो आप रै दिमाग ऊपर किण री ई सिफारिस रो असर हुवण देवता पण नईं।

वै दयालु हा पण सिद्धांत रा ई पक्का हा। चोर वां रै घर मे रैवै, आ बात ई वा नै पसन्द नी ही। आपरी कोठी में नोकर अर वा रै सिवाय तीजो जणो कोनीं रैवतो। एक दफै वा री घड़ी गुमगी। वा नोकर नै घडी री बाबत पूछियो पण वो सफा नटग्यो। वा, वै नै घणो ई समझायो पण वै हामल भरी कोनी। आखर वा फोन कर'र एम०पी० साहब नै बुलाया अर सगळी बात समझाय'र वै नोकर नै वा सागै रवानै करियो। पण अग्रेजी मे बोल'र उणां नै कह्यो कै मारपीट मती ना करीजो। खैर भला।

एस० पी० साहब मोटर मे बैठण लागा इतै मे ई वै नोकर आप री गळती कबूल करली। अर दो ई मिन्टा मे घड़ी बरामद कराय दी। वां जज साहब नै पूछियो—"अबै काईं करा?"

"कानून अपना काम करेगा।" जज साहब कह्यो।

फेर वै री चलाण हुयो। वै आप री जुर्म कबूल कर लियो। इण खातर तफतीश करण आळै हाकम वै नै 'ता बरखास्तगी अदालत सजा दी अर एक सौ रुपिया जुर्मानो करियो। अदम अदाये जुर्मानो, दस दिन री सजा सुणाई।'

जज साहब (बैजनाथदासजी) वै रो जुर्मानो भरियो अर वै ई दिन उण नै टिगस कटाय'र उण रै घरै रवानै करियो। रास्तै में खर्च करण सारू पच्चीस रुपिया ई हाथ में थमाया।

वै मुकदमै रा हालत पढ़'र झूठ-सच नै समझ जावता। वै वैस सुण'र वै ई दिन फैसलो लिखावता। जिण मुकदमै में पैरवी करणम्राळो वकील नईं हुवतो तो वै खुद ई न्याय करण खातर खिलाफ पारटीम्राळै वकील नै दो-च्यार सवाल पूछता अर फेर फैसलो लिखावता।

वै कैवता कै 'हाई कोर्ट' ताणी फरियाद लेय'र आवणियै री बात तो कम-सूं कम सुणनी ई चाईजै। दुःखी हुयर ई तो कोई आवै है।

डाकै रै मुकदमां मे अर 'रेप' रै मुकदमा मे, गवायां नै आखिर में वै खुद कई प्रश्न पूछता। वां रो मत हो कै जद जनता री आवरू अर सम्पति री रक्षा रो विश्वास वां नै नईं जमसी तो काम कियां चालमी ? पण साथै री साथै आ बात भी ख्याल में राखणी चाईजै कै किण ई नै झूठो नईं फंसायो जावै।

इण कारण ही वै इसा मुकदमां में कस'र पूरी-री-पूरी सजा देवता, जुर्म सावत हुवण पर। फेर नरमी नईं बरतता। अर जें शक हुवतो अर जुर्म साबत नईं हुवतो तो वै बरियत रो फैसलो लिखावण में ई ढ़ील नईं करता।

वै झूठ रो आसरो लेवणम्राळा सूं चिगता। एक बार री बात है कै वै एक मुकदमै रो फैसलो लिखाय रैया हा। वै मुद्दायलै री जबावदेही मंजूर कर'र दावो खारज करणम्राळा हा मिसल रै आधार ऊपर, पण वै समै ई वकील मुद्दई अर्ज करी कै—"गरीबपरवर ! इण अदालत मे तो मुद्दायलै इण कर्ज रै लेवण सूं इनकार करियो है. पण दो बरस पैला वै मुनसफी, बीकानेर में, आप रै एक मुकदमै में 'मुफलसी' री दरखास्त दी ही, जिणमें मुद्दई रै इण कर्ज री रकम रो भी इन्द्राज करियो हो अर बयान मेई इण कर्ज नै मानियो हो, वै मुकदमै में।"

आ सुण'र जज साहब फैसलो लिखावणो रोक दियो, सब नै उठै रोक लिया, अर हेठै'री अदालत री वा मिसल माफसखानै सूं मंगाई, बी

बखत ही तलब कर'र । मिसल आई । वां देखी अर मुद्दायलै रा हुयोड़ा बयान पढ़िया । फेर झट, वै नै ऊपर बुलायो, आपरै खनै, डायस ऊपर । बुलाय'र बयान रै हेठै वै रा दस्तखत देखाय'र पूछियो—"ये दस्तखत तुम्हारे हैं ?"

मुद्दायलै दस्तखत देखिया तो वै रै पगां हेठै सूं जमीं खिसकण लागी । वो चुप रैयो ।

"बोलो, अगर तुम्हारे दस्तखत नहीं हैं, तो फर्जी दस्तखत बनाने वाले मुन्सिफ को जेल भेज दूंगा । मैंने तय कर लिया है कि आज या तो मुन्सिफ को जेल भेजूंगा या तुम्हें ।"

वो डरग्यो । सई बात तो सई ई रैवै । वै हामल भरी, जद जज साहब झट कागज लेय'र वै रा बयान लिखिया, हलफ दिराय'र । जवाब दावै रै दस्तखतां नै भी वै खनै हुकराया ।

वै नै हुकारना पडिया आपरा बयान अर नटतो ई कियां ? अदालत में हुयोड़ा बयान हा, अर वा वकील साहब री मौजूदगी में ई हुयोडा हा।

बयान लिख'र दोनां पारटिया रै वकीला नै जिरह रो मौको दियो पण जिरह मे कई पूछता ? बात तो सगळी साफ हुयगी ही । इण वास्तै वा वापस फैसलो लिखावणो शुरू करियो—

"मैं दावा खारिज करने वाला था कि मेरा ध्यान मुद्दायले के दूसरे मुकदमे की ओर आकर्षित किया गया । इन्साफ के लिये मैंने मिसल तलब करके कार्यवाही की ।...... अत. मैं दावा मुद्दई खर्चे समेत डिगरी करता हूं । ......।"

एक वार इसो ई पेचीदो मामलो वा रै सामनै आयो । एक मुद्दई नीचै री अदालत मे दावो करियो । दावो रुक्के री बिनाय पर हो । मुद्दायलै हेठै री अदालत मे कर्ज सूं इनकार करियो अर रुक्को तकमील करण री बात सूं ई कतई इनकार करियो । सबूल मुद्दई रै जिम्मै हो । मुद्दई आप रा बयान दिया अर दो गवाया रा बयान ई कराया । मुद्दायलै आप री तरफ सूं आपरा बयान दिया अर एक 'हैण्ड-राइटिंग एक्सपर्ट रा

बयान कराया । वै मुद्दायलै रा दस्तखत रुक्कै ऊपर नई हुवणा बताया । मुद्दई ई ग्रापरी तरफ सूं 'एक्सपर्ट' सनैं जांच कराई पण वै ई सागी बात बताई जिकी मुद्दायलै रै 'एक्सपर्ट' बताई ही । इण वास्तै वै री गवाई नई कराई गई ।

इण हालात मे दावो खारिज हुवतो ई । खैर साय, मुद्दई अपील करी । न्यायमूर्तिजी सुणी । हेठै री अदालत मुद्दई ग्रर उण री गवाया ऊपर गलत बयानी रै कारण दफा १९३ ता० हिन्द रै तहत मुकदमो चलावण री बात ई लिखी ही, इण वास्तै अपील करणी जरूरी ही ।

जज साहब वैस सुणी ग्रर फैसलो लिखायो—"इस बात में शक नही है कि मुद्दई की जेब से रुपये निकलकर मुद्दायले की जेब मे पहुंचे । पर यह बात सच नही कि दस्तखत मुद्दायले के हो । मुद्दायले ने मुद्दई के विश्वास का फायदा उठाकर गडबड़ की है अत: अपील इस हद तक कि 'दावा मुद्दई डिगरी हो '—खारिज की जाती है और इस हद तक मजूर की जाती है कि दफा १९३ ताजीरात हिन्द के तहत मुकदमा न चलाया जावे । खर्चा फरीकैन अपना अपना भुगतें । .... "

इण फैसलै री चरचा कई बार 'बार-रूम' मे हुवै । इण फैसलै मे जज साहब रै तै तांई पूगण री बात कहीजै । कारण ओ हो कै मुद्दई ग्रर मुद्दायलो जिगरी भायला हा। मुद्दायलो एक वकील साहब रो मुंसी हो । वो कचेडी मे रमियोडो हो ग्रर मुद्दई हो भोळो-भाळो । वो मुद्दायलै सार्थ कचेड़ी जरूर जावतो, मौके-टौकै ।

मुद्दायलै, मुद्दई कनै कई बार रुपिया उधार लिया ग्रर चुकाय दिया वै नै । एक दफै एक हजार रुपिया लिया एक मईनै रै वादै सूं । वै रुक्को लिख'र लाय दियो मुद्दई नै । मुद्दई ग्राप कनै राख लियो ।

तीन-चार मईनां बाद वै तगादो करियो तो मुद्दायलो ग्राजकाळ करण लागो । वो टाळतो रैयो ग्रर ग्राखर मे वां रै बीच बोल-चाल हुयगी । बात भलगी । ग्रर मुद्दायलै कैयो —"लाल कोथळी सीवाय राखे ।"

मुद्दई वकील री मारफत नोटिस दियो, एक हफ्तै मे रुपिया चुकावण रो, पण रुपियां री जबाब जाग्या ग्रायो इनकारी रो ।

मुद्दई दावो करियो । कारवाई हुई ग्रर दावो खारिज हुयो ।

असली बात आ ही कै मुद्दई रुपिया देय'र मुद्दायलै नै कैयो कै रुक्को लिख दे । वै रुक्को लिखियोड़ो--पूरो मुकम्मिल--लाय दियो । पण वो रुक्को वास्तव मे मुद्दायलै रै हाथ सूं लिखियोड़ो हो कोनी । वै किण ई दूसरै कनै लिखायो हो । अर दस्तखत ? दस्तखत ई किण ई बीजै रै हाथ सू करायोडा हा । मुद्दई विचारो अविस्वास किया करतो ? वो विस्वास मे आयग्यो । वै नै कई ठा ही कै वो उण रै साथै इसी बितासी । वै तो रुक्को लेय'र आपरै बस्तै मे सम्भाळ'र राख लियो हो ।

इण तरै न्यायमूर्ति वास्तव मे न्यायमूर्ति ई हा ।



ठाकर साहब

बीकानेर रियासत रा (तत्कालीन) महाराजा गगासिंघजी जिण लोगा नै 'जीकारो' देय'र वतळावता, उणा मे ठा० श्री सादुलसिंघजी हा। वै रोडै गाव रा ठाकर हा इण खातर ठाकर साहब रोडैग्राळा नाव सूं भी वै ग्रोळखीजता। ऊंचै सूं ऊंचै पद माथै रैवता थका भी वै साधु ज्यो जीवन वितावता। गरीबा री मुणाई करणग्राळा, घमण्ड सू ग्रळगा रैवणिया हा वै।

गोरै रंग, दोलड़ै शरीर, डीगै कद ग्रर गोळ चैरै ग्राळा हा ठाकर साहब। दफ्तर जावतै पैंट-कोट ग्रर हैट पण घर मे देसी पैरैस पैरता वै।

वै टैम ग्रर कांम रा पक्का हा। दफ्तर पौंचण री टैम ठीक दस बज्या पण घरै वापस जावण खातर, दफ्तर रो काम निपटाय'र, निकास हुवतो। घणी बार तो रात री एक-डेढ़ ई बजती। पण उथफणो नईं। वै वरिष्ठ मन्त्री हा।

वै दयालु हा। हर एक सूं मीठा बोलता ग्रर काम करणियै री कदर ई करता। दिनूंगै दफ्तर (महकमा खास) पहुंच'र कई बार वै ह्राफै कमरै री बारधा खोलता। उण रै इण काम नै देख'र 'हैड बाबू' कुढ़तो ग्रर चपरासी रै खिलाफ कारवाई करण री बात कैवतो पण ठाकर साहब उथळो देवता—"चपरासी देर सूं ग्रावै इण बात मे वां रो काईं कसूर है ? वापडो रात री दो बज्या घरै पहुंचै। फेर टुकड़ो खाय'र पड़ जावै। जद वो दिनूंगै कियां हाजर हुसी नव बज्यां ?"

वैं कामवसु नईं रैंवता । एक दिन वा घटी बजाई । चपरासी कोई ग्रायो कोनी, इण खातर वैं खुद ई लोटो लेय'र प्याऊ माथै गया ग्रर हाथ धोय'र जळ सूं लोटो भरियो ग्रर पीवण लागया । फेर लोटो भर'र पूठा ग्राया । वा रो 'हैडबाबू' हक्को बक्को रैंग्यो । पण वा सान्ति सूं कैयो—"थै ई जळ पीवो ।" ग्रा कैंय'र बो लोटो उण री मेज माथैं मेल दियो ।

दफतर मे वैं काम मे ई लाग्योडा रैंवता । उण दिना महकमा खास मे मन्त्रिया खातर 'थाळ' री व्यवस्या ही, राज री तरफ सूं । दम सिगरेटा ई रोज मिलती ही पण वा ना तो कदई 'थाळ' मांगायो ग्रर ना ई सिगरेट ली ।

वैं, बाबुवा ग्रर चपरास्या सूं नाराज नईं हुवता। वै क्रोध जाणै करता ई कोनीं । वां रै विभाग रो कोई बाबू या चपरासी बीमार हुवतो तो वैं खुद वैं री हकीकत पूछता । जे कदास वैं रो इलाज ठीक नही हुवतो तो वैं उण नैं ग्रस्पताल मे भर्ती करावता ग्रर पी एम. ग्रो. साहब ने भोळावण ई दे देवता । वैं उण नैं कैंवता कै छुट्टी री चिन्त्या करण री जरूरत कोनी, इलाज ठीक सर करावे ।

वैं झूठ बोलणियैं सूं चिढ़ता । जे कदास कोई छुट्टी लेवण खातर झूठो कारण लिख देवतो ग्रर वा नैं ठा पड़ जावती तो फेर उण नैं वैं ग्राडै हाथा लेवता ।

वा नैं बागवानी रो शौक हो । ग्रापरैं डेरैं रैं बाग री वैं खुद सार-सभाळ करता ।

मोड़-बड़ाई वा रैं ग्रागै-लारैं ई ही कोनी । तड़क-भड़क सूं ई वैं ग्रलग रैंवता । वा रो हर काम टच रैंवतो ।

वैं घूमण नैं भी जाया करता हा । एक बार री बात है कै वैं डेरै सूं निसरीया । थोडी दूर टुरिया हुवैंता कै बोरा री भ्रोडी देखी । बोर बेचण ग्राळी छोकरी गनैं बैठी ही । वैं उठै ढूकिया ग्रर पक्का-पक्का बोर टाळण लागा ।

"टाळ मती ना व्हाला" –डोकरी कह्यो ।

"टाळवा लेसूं अर दाम थारै मन माफिक दे देमूं माजी । आ कैय'र पाव भर टळवां बोर वा छाट लिया । फेर वै डोकरी रै कैणै मुजब तीन डबल दिया पण जावती टैम एक चार आनी और फेंकग्या ओडी मे ।

वै आपरै विभाग रै कर्मचारिया रै बारै मे जाणकार रैवता । मौकै माथै वां रा हिमायती ई वणता ठाकर साहब । वै ढाल हा ढाल वा रै खातर । एक बार वां नै एस० पी० साहब फोन करियो अर कह्यो कै आपरै दफ्तर में काम करण आळै एक बाबू रै वर खिलाफ सी० आई० डी० इन्सपैक्टर रिपोर्ट कीनी है । रिपोर्ट रै अनुसार वो क्रान्तिकारी है अर क्रान्तिकारियां सूं मेळ राखै ।

"तो आप रिपोर्ट सागै वै इन्सपैक्टर ने हणै ई भेज दो । हूं देख'र आपनै सूचित कर देसूं कै कईं करणो उचित है—" ओ उथळो वां दियो ।

थोड़ी देर बाद वा रै कमरै में बो इन्सपैक्टर घुसियो अर रिपोर्ट पेस करी ।

वा रिपोर्ट पं० मुरलीधरजी रै खिलाफ ही । वा रै खिलाफ इल्जाम हो कै वै पं० जानकीप्रसादजी वगरहट्टै रै घरा जावै । वा रै खिलाफ खादी पैरण रो ई इल्जाम हो ।

रिपोर्ट पढ़तां ई ठाकर साहब धीरै सूं कह्यो—"हूं तो अबै लायक नईं रह्यो इण पद पर काम करण रै ।"

"है ·········· है सा'ब । ·······"

"है सा'ब कांई । जद म्हारै नाक नीचै रहवणियै बाबू रै बारै मे म्हांसू ज्यादा ठा थ्हानै है जद हूं महकमा खास मे कियां काम कर सकूं ?"

वो इन्सपैक्टर नीची नस कियोडो खड़ो रह्यो ।

वां फेर कह्यो—"म्हारो बाबू जानकीप्रसादजी रै घरां जावै पण क्यो जावै इण बात री ठा म्हानै है ? ······ जानकीप्रसादजी रा बड़ा भाई वा रा गुरु है । वै नाटक री तैयारी करावै । वै नाटक मण्डली रा उस्ताद है अर म्हारो बाबू नाटक खेलण मे भाग लेवै । क्या सास्कृतिक कामां में भाग लेवणो गुनाह है ?"

"सा······ हू माफी ····"

"नई' माफी री कांई बात है ? अर थ्हानै आ ठा हुवैला कै खादी तो अठै रो बणियोड़ो सस्तो कपड़ो है जिकै सूं ई गरीबां रो गुजारो चालै। थै जिकै नै खादी कैय'र इल्जाम लगावो वा तो डोवटी है । म्हारै ई डोवटी रो कमीज पैरण नै है"—आ कैय'र कोट हेठै पैरियोड़ो आपरो कमीज देखायो।

वो इन्सपैक्टर गिडगिड़ावण लागो । जद वा रिपोर्ट आपरै कनै राख'र वै नै रवानै कियो ।

वै कह्या करता कै जद, म्हारै विभाग रै लोगा रै बारै मे हूं ई कम जाणतो हुईस जद फेर काम हुय लिया । कुण किसो'क है इण बात री ठा तो साधारण बातचीत सूं ई लाग जावै ।

वै न्याय करणआळा हा । वां खनै अपीलां आवती । एक बार एक डोकरी वां नै अरज करी कै वै रै जेठूतै उण री सगळी जमी हड़प ली । वै री सुणाई कठै ई नई' हुई । वां इण खातर मिसल मुलाहिजा करी । फेर पेशी रै वकत उण रै जेठूतै नै डाट'र कह्यो—"थ्हें खोटा नकशा बणवाय'र पेश करिया है । हू थ्हनै अर गजधर दोनां नै जेल भेजसूं ।"

"है हजूर ·········"

"हजूर-वजूर की नई' समझू । हजूर तो लालगढ मे बैठा है। म्हानै तो साची बात बताव ।"

"सा'व·······। हूं फैसलो कर लोस ।" आ कैय'र वा रै पगै पड़ण लागो ।

"म्हारै पगै नई', इण डोकरी रा पग झाल । इण नै राजी कर ।"

वै मिनख फेर डोकरी रा पग पकड़ लिया । डोकरी उण सूं राजीपो कर लियो अर आसीस्या देवती उठै सू गई ।

वां नै फुटबाल रो मैच देखण रो शौक हो । फुटबाल रा टूरनामैण्ट चालता जद वै प्राय: स्टेडियम जाया करता । वै खुद भी तो आच्छा खिलाडी हा आपरै जमानै रा ।

स्टेडियम जावण सूं पैला वै सगळो काम निपटाय देवता । उठती वेळा वै हैड बाबू नै कैवता—"पाच बजगी है, कंई कांम हुवै तो बताय

देवो।" अर जद काम री तरफ सूं वां नै हरी झंडी मिल जावती तो वै रवानै हुवता।

एक दिन वै रवानै हुया ही हा कै हैड बाबू सायावळ सूं गयो अर एक कागज सामै कर'र कह्यो—"एक कागज पर दस्तखत करणा है, सा'ब।"

"ओ हुणै हुणै में कठै सूं जिलमग्यो ? एक मिन्ट पैला ताईं तो एक ई कागज कोनीं हो दस्तखता खातर। अबै इण नै आज-काज में थोड़ो बडो हुयण दो, काल देखसूं"—आज कैय'र वै रवानै हुयग्या।

वां री बहुत मान हो। उण समै रा महाराज गंगासिंघजी इणियै-गिणियै लोगा नै जीकारो देवता हा। अर उण लोगां में ठाकर साहब रो नाव ई हो।

वै अध्यापकां री बहुत आदर करता। मा सरस्वती रै पावन मन्दिरां रै प्रति वां रै हृदय में अगाध श्रद्धा ही।

एक वार री बात है कै एक मास्टरजी (दीनानाथजी) वां रै डेरै पढावण नै जावणो सुरू करियो। ठाकर साहब वां नै "प्रणाम मास्टर जी" कह्यो। मास्टरजी संकोच कर'र अरज करी, "ठाकर सा'ब, आप म्हारै पिताजी री ऊमर रा हो। आप म्हनै प्रणाम करो आ ···· "

मास्टरजी वाक्य पूरो करता ई हा कै ठाकर साहब बीच में ई बोल'र कह्यो—"मास्टर सा'ब ! आपनै ठा हुवै ला कै हूं वाल्टर नोबरस हाई स्कूल मे भणियोड़ो हूं।"

"जी।"

"अर आप उण हीज स्कूल मे अध्यापक हो। आप जिण कुरसी ऊपर विराजो वा म्हारै खातर पूज्य है। अर हूं वै कुरसी माथै बैठण लायक जलम भर नईं बण सकूं। ···· हूं वै कुरसी नै भी, आपनै प्रणाम करनै, सीश झुकाऊं हूं। आप वै सरस्वती रै पवित्र मन्दिर मे साधना करो हो।" आ बात कैय'र वै उठै सूं टुरण लागा अर टुरता-टुरता फेर "प्रणाम मास्टरजी" कैयग्या।

आपणै अठै री हळकी नईं दीसै—ओ विचार वां रै मन मे हर वखत रैवतो।

हार्डिंग्ज साहब होम मिनिस्टर रो चार्ज सम्भाळ'र आपरो कमरो देखियो। गरमी री भयंकरता अर बिना टाटां रो कमरो। उणा रो माथो ठणक्यो। ठाकर साहब उणां री गत लखग्या। वैं वखत ई टाटा मंगवाय'र कमरो ठण्डो करवाय दियो। हार्डिंग्ज साहब कृतज्ञता प्रगट करी अर दूसरा मिनिस्टरां रै कमरा रै टाटा नईं हुवण रै बारै में पूछियो।

"म्है तो देसी आदमी हां। म्हारै खातर गरमी-सरदी सहवणी साधारण बात है। अर टाटा मे रैवण सूं बारै नीसरां जणै जुखाम हुय जावै।"

ठाकर साहब ओ उथळो दे तो दियो, बात सारन खारण पण असल बात आ ही कै गंगासिंघजी री तरफ सूं महकमा खास मे टाटा लगावण री मनाई ही। अर वै टाटा ठाकर साहब आप रै पईसां सूं खरीद'र लगवाया हा।

